क्या जाने तेरा साहब कैसा है ?

वचन सत्संग हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज

(सत्संदेश मार्च, 1960 में प्रकाशित प्रवचन)

ना जाने तेरा साहब कैसा है ।
साधो नई बात हम जानी, क्या तुम से कहे बखानी।
ऋषि मुनि और पीर पैगम्बर, सब ज्ञानी और ध्यानी ॥
जब लौं अमल नहीं है सांचा, सब है राम कहानी ।
नया खेल जो देखा चाहे, तज दे लीक पुरानी ॥
मान अपमान और राग द्वेश तज, तज दे लाभ और हानी ।
इन सब को जो सम कर जाने, वही है पूरा ज्ञानी ।
तत्व यही है अगला पिछला, नई पुरानी बखानी ।
शाहिन्शाह तज भरम बासना, भय और आना कानी ॥

जब भी महापुरुष आये हैं, वह इस बात पर जोर देते रहे हैं कि बगैर गुरु के गति नहीं क्योंकि जिस रस्ते का कोई वाकफ ही नहीं, आपको क्या बतलायेगा ? गुरु का काम जिसम के Level से ऊपर जा कर शुरू होता है, यह कहो। यह कोई आसान काम नहीं है, बड़ी जुम्मेवारी का काम है, उसका काम सिख (शिष्य) की रूह को मालिक के साथ मिलाना है, और यह किसी समर्थ पुरुष की कहानी है। जो खुद ही नहीं मिला वह दूसरों को क्या मिलायेगा ? अपना तो अकाज करता ही है, दूसरों का भी अकाज करता है, सब का पाप उसके सिर पर है। बाहिर इन्द्रियों के घाट के मुतल्लिक जो कुछ उसने जाना है, वह तो आपको बतला सकता है, जो इसके ऊपर की कहानी है, उसके मुतल्लिक क्या बतलायेगा ? दुनिया आज गुरुओं से भरी पड़ी है। सच पूछो तो आज इतने गुरु हैं कि जितने शायद सिख नहीं मिलते। मगर एक अनुभवी पुरुष जिस की आँख खुली है, वह जब देखता है कि दुनिया का अकाज है, वह किसी को बुरा भला तो नहीं कहता, मगर सच ही पेश करता है कि भई असलियत क्या है, भूलो भटको नहीं, मनुष्य जीवन बड़े भागों से मिला है, इससे पूरा फायदा उठाओ। गुरु और So-called गुरु कहो, एक सचमुच गुरु कहो, एक जो Acting posing कर रहा है कह दो। शेर की खाल अगर एक आदमी पहिन ले तो शेर तो नहीं बन जाता है। समझे ! शेर ही हो तभी काम बन सकता है। उसी की शरण में जाकर तुम सब गीदड़ों की भभकियों से बच सकते हो। अगर एक हो कुछ और, खाल शेर की पहन ले, तो कब तक कोई उससे डरेगा ? जब तक कि परदा फ़ाश नहीं होता। बात तो यही है।

इसमें शक नहीं कि बगैर गुरु के गति नहीं मगर सच-मुच गुरु के न मिलने से जितनी अधोगति हो रही है, शायद ही किसी जमाने में हुई हो। जैसे जैसे आज कल लोग हर एक पहलू से तरक्की कर रहे हैं, इसलिये बाहिरी स्वांग बनने में, Acting posing में और बाहिरी आडम्बर बनाने में, आज इसमें भी बड़ी तरक्की हो रही है। दुनिया जो मुतलाशी (तलाश में) है सचमुच, जो किसी ऐसी हस्ती के पास पहुंच जाते हैं तो तलख तजुरूबे से कहते है कि It is all gurudom. क्योंकि हालात जो ऐसे बन गये। जो खुद को एक चीज को समझता नहीं, दूसरों को अपने कन्धे पर उठाकर ले जाना चाहते हैं, नतीजा क्या होगा ?

अन्धा गुरु अते अन्धा चेला।
नरका नरकी धकेलम धकेला ॥

और क्या होगा ? जिधर वह जायेगा, उधर वह पीछे लगे हुये भी जायेंगे। तुम भेड़ की पूंछ पकड़ कर दरिया से पार नहीं हो सकते, यह याद रखो। गाय की पूंछ को पकड़ो फिर भी पार हो जाओगे। जो खुद तैरना नहीं जानता वह तुमको कैसे तरायेगा ? बड़ी बात तो यह है। अब जिस मनुष्य को तलख तजरुबा होता है, वह बिचारा बेज़ार हो जाता है। वह कहता है किताबें अच्छी हैं, आपकी मेहरबानी। तो इसके मुतल्लिक महापुरुषों ने बहुत कुछ Warning दी है, कि जब तक सचमुच, सच्चा महात्मा न मिले, जीव की कल्याण नहीं है। जितने जितने ठिकाने कोई बैठा है, उतने ही ठिकाने पर वह कहता है, मैं बस पहुँच गया। याद रखो महात्मा पूर्ण यह कभी नहीं कहता कि मैं पहुंच गया। उसको दुनिया अभी बड़ी दूर मालूम होती है। देखिये एक पांचवी पढ़ा हुआ भी कहता है इलम ला-इन्तहा (अनन्त) है, एक दसवीं पढ़ा भी कहता है, एक कालिज का प्रोफेसर भी कहता है । न्यूटन भी यह कहता है, I am picking pebbles on the sea-shore of knowledge मैं उस ज्ञान के समुन्दर के किनारे अभी कंकर चुन रहा हूं ।

जब जब अनुभवी पुरुष आते हैं, वह उसको लाबयान को, बयान करते चले जाते हैं। कहते हैं उसकी दया से मिला है, अगर कुछ मिला है, कर वह रहा है। वह Assert नहीं करेगा कि मैं ही करने वाला हूं, मैं पहुँच गया, यह नहीं कहेगा। एहसास है उसको मैं Mouthpiece of God हूं। मगर वह एक नम्रता का सबक पेश करता है, कर के भी वह कहता है कि वही करता है। देखिये एक हो Pole, उसका Switch हो, वह फरज करो हज़ार का है, हजार वाट का, तो हजार वाट तक तो ले सकता है, सारे पावर हौस को तो नहीं इज़हार कर सकता है ? जो Conscious contact में है, वह देखता है वह (प्रभु) पावरहौस है, जैसा रेत का कंकर होता है, ऐसा मैं हूं। तो उसमें Assertion नहीं होगी कभी। अब दुनिया की यह हालत देख कर अपने दर्जे पर बहुत गुरु मिलते हैं। कोई बाहर रस्मों-रिवाजी ही मिलते हैं। कोई Will force के Strong करने वाले मिलते हैं, कोई ऋद्धि-सिद्ध, कुछ Mind reading वगैरह, यह वह के मिलते हैं, कुछ जिसमानी बड़े पुष्ट बना कर कई Miracles (चमत्कार) कराते हैं, कई जमीन के अन्तर दब कर हफ्तों,

महीनों बैठे रहते हैं। यह Regular sciences हैं, मगर सच पूछो तो बिल्कुल Elementary steps हैं। जैसे मकान में दाखल होना हो, उस के फाटक में भी आना है, यहां का काम है, अभी अन्तर की Entrance (प्रवेश) नहीं, थोड़ी थोड़ी चीजें Concentration (एकाग्रता) के सबब से बन जाती है। इन्सान उसी में मस्त है। बिलकुल यह भी नजर आता है, बड़ा कमाई वाला है। जब सच रहता है तो नकल भी बहुत रहती है। कुदरती बात है। जबसे दुनिया बनी है, आज कोई नई बात नहीं है। तो इसलिये महापुरुष यह कहते हैं कि जिस को कुछ चीज है, जिसके पास है, वही दे सकता है। जिसके पास है नहीं वह कैसे देगा ?एक लोहार की दुकान पर जाओ, उसको कहो भई हीरे जवाहरात दो, वह आपको देगा कभी, या रेशम दे देगा? जिस दायरे का वह माहिर है, वह उतना तो दे देगा, ठीक है। यह जो आत्म-विद्या है ना, यह आत्मतत्व का बोध है, यह न Will force को Strong करना है, यह याद रखो भई, न यह Mind reading ना ही यह दूसरों के Inference करने का नाम है। यह तो भई Self-analysis है,आत्मतत्व का बोध है, Practical science है। जो ऊपर जाता है, Way-up है, दूसरों को कर सकता है। यह कुछ और चीज है। रस्ते में Concentration के सबब से कई Supernatural powers (ऋद्धियां सिद्धियां) आ जाती हैं। जो उस में लग गया वह रूक गया। वह अटक गया। अगर ऐसी Concentration के Way में चीजें आने भी लगें, तो वह दूसरों को Guard करता है, खबरदार भई मारे न जाना ।

ऋद्धि सिद्धि नावें की दासी ।

ऋद्धियां और सिद्धियां नाम की दासी हैं, इनको बरतो नहीं, अपने आप जो होता है होने दो। तो जो Conscious co-workder of divine plan बन जाता है, उसमें यह खामियां (त्रुटियां) कहो, नहीं रहती हैं। वैसे जितने महात्मा मिल जायें खुश-किस्मती है। मगर जो आत्म-तत्व के बोध की तरफ हैं, Science of the soul को जानना चाहते हैं, अपने Source से मिलना चाहते हैं, वह किसी ऐसे अनुभवी पुरुष से इस गति को पा सकेंगे, जिसने इसको पाया है। तो जब जब भी महापुरुष आये हैं, सच के साथ नकल भी शुरू होती है। असल के साथ नकल रहती है, और नकल बहुत रहती है। दुनिया बिचारी तमीज नहीं कर सकती, क्या करे, किधर जाये, क्या न करे। Talks और Speeches से लोग कहते हैं क्या आला (उत्तम) Talk देता है, अरे भई Talk के पीछे क्या है ? देखने वाली बात तो यह है। तो इस वक्त आपके सामने एक दो महात्माओं की बाणियां रखी जायेंगी, कि दुनिया में हो क्या रहा है, और किससे हमारी सच्ची कल्याण हो सकती है। गौर से सुनिये वह क्या फरमाते हैं। यह मैंने जो कुछ बात कही सिर्फ इस नजर से कही कि दुनिया बिचारी बड़ी गुमराही में है, कैसे बच सकती है ? यह आज कोई नया सवाल नहीं है, हमेशा से रहा है । जो बाणियां पेश की जायेंगी वह आज के महात्माओं की नहीं पेश की जायेंगी। वह उनकी हैं जो पांच सौ, सात सौ, हजार सालों से पहिले हुए हैं।

मतलब यह है कि जो आज फ़िजा (वातावरण) है, यह आगे भी होती थी। बल्कि आज और कई गुना ज्यादा है, गौर से सुनिये वह क्या फरमाते हैं। कबीर साहब का शब्द है -

ना जाने तेरा साहिब कैसा है ।

हम सब मालिक को पाना चाहते हैं ना। जिसको तुम पाना चाहते हो, अरे भई वह कैसा है ? उसके जानने से गति है ! जिसके अन्तर उसके पाने की खाहिश बन गई, पिछले संस्कारों के सबब से या यहां विवेक से काम लेते हुये, या दुनिया के नशेबो-फ़राज़ (ऊंच-नीच) के धक्के खाते हुए जिसको होश आ गई, भई मेरा जीवन आधार क्या है, Permanent (हमेशा का) सुख किस बात में है, कहते हैं, वह जिसको तुम पाना चाहते हो, वह कैसा है यह मालूम नहीं। हर एक जुज्व (अंश) अपने कुल (अंशी) से मिलना चाहता है, यह कुदरती है, Innate है, जातियत में शामिल है। तो आत्मा का परमात्मा, भक्त का भगवान, समझे, कहते हैं, वह कैसा है, जिसको तुम मिलना चाहते हो ? और कैसे मिल सकते हो ? यह सवाल है हर एक इन्सान के सामने As a man problem है। तो आप ही सवाल करते है, क्या जाने वह मालिक तुम्हारा कैसा है भई? उसको कैसे मिल सकते हो ? सवाल यही है ना।

मसजिद भीतर मुल्ला पुकारे,
क्या साहिब तेरा बैहरा है।

अब एक जागृत पुरुष की नजर से कह रहे हैं, याने जो मस्जिदें, धर्म स्थान बनाये गये ना, उसका खास मतलब था। इस हरि मन्दिर के नमूने पर बनाये थे, समझे, जितने धर्म स्थान हैं। अब मस्जिद को लीजिये पहिले, क्योंकि उन्होंने वही जिकर किया है। वह सब महराबदार हैं, माथे की शकल में। इसमें बांग हो रही है। आपको पता है, जब मुल्ला मुनारे पर चढ़ता है, मुनारा ऊंची जगह होती है, वहाँ पर आवाज देता है, बांग देता है। यह नकल थी, शरीर के हरि मन्दिर की (माथे पर इशारा करके) यह है मुनारा, यहां से ऊपर यहां खड़े होकर ध्वनि को सुनना था, उस ध्वनि की नकल ''अलाह हू'' लम्बा कर के बयान करते हैं। उस ध्वनि को सुनना था। मुनारे पर चढ़ के। यह मुनारा है। हिन्दु भाईयों में भी इस बात का थोड़ा इशारा है। बड़े तरीके से बयान किया है, कि पार्वती थी, शिव भगवान के साथ बैठी है। पार्वती क्यों कहा ? पर्बत पर रहने वाली। यह पर्बत है ना (माथे पर इशारा करके) यहां पर आत्मा रहती है। तो कहा है -

कोटि जन्म तक रगड़ हमारी ।
वरूं शम्भू नहीं तो रहूं कवारी ।।

करोड़ों जन्म तक मेरी रगड़ है, मैं उसी को (प्रभु) को पाऊंगी। परमात्मा के पाने के बगैर मेरी शान्ति नहीं है। तरीका बयान का है। इसी तरह मुल्ला मुनारे पर चढ़ कर कहता है। यह मुनारा है, यहां चढ़ कर ऊंची बाँग, कलामें कदीम जो हो रही है, उसको सुनना चाहता है, उसकी नकल बनाई है। बात क्या थी, और बन क्या रही है। चिन्ह रखा था कि पर्बत पर, मुनारे पर चढ़कर,

वह हमेशा ऊंची जगह होती है, वहां पर, कान के यहां हाथ रखते हैं। कान पर (इशारे से) ऐसे करके करते हैं। कान बन्द नहीं करते हैं। यह भूल गये लोग। कान बन्द करके उस आवाज को सुनते थे, बाहर से हट कर। वह बाहर नकल तो रह गई, अवाज की भी नकल बनाई, मगर आमिल लोगों की कमी के सबब से बात समझ में नहीं आ रही है। तो कबीर कहते हैं, क्या खुदा गूंगा है, वह घट-घट की, पट-पट की जानने वाला है। हमारी आत्मा का जीवन आधार है। अरे भई तुम यह कहते हो, बांग देते हो, उस तक पहुंचे, वह बांग तो अन्तर आ रही है, उसको सुनना था। कान बन्द करके सुनाई देनी थी, बाहिर का ख्याल हटा कर। मगर हाथ तो वैसे ही रख लेते हैं, कान बन्द नहीं करते। नकल बाकी रह गई, असल जाती रही। आप देखिये Gleanings (इशारे) तो उसकी है, मगर आमिल पुरुषों के बगैर समझ नहीं आते। यह कटाक्ष नहीं, यह एक बात की वाजेह (स्पष्ट) करना है, एक हकीकत को जो है कि असल की नकल कैसे रह गई। बस। मतलब और कुछ नहीं है। रस्मों, रिवाजों में हमारे जो है, उनमें Truth की Gleanings है, समझे। जैसे अन्त समय आता है,कहते हैं, दीवा मंसाओ भई, जल्दी करो। सिख भाईयों के गुरुद्वारों में जब अखण्ड पाठ का भोग रखते हैं तो घड़ा बना कर ऊपर दीवा जगाते हैं। अरे भई यह घड़ा है(शरीर की तरफ़ इशारा करके) यहां दीवा जग रहा है। यह चिन्ह बनाये थे बाहर समझाने-बुझाने के लिये। जब तक आमिल (अनुभवी) लोग रहे, काम बनता रहा। कहते हैं अरे भाई तू किस ख्याल से ऊंचे मुनारे पर चढ़ कर आवाज देता है? तू आगे ही मुनारे पर बैठा है, नीचे से चढ़, यहां आ। नीचे चक्रों को छोड़, यहां आ कर कलामें कदीम जो हो रही है, उसको सुन। तुलसी साहब के पास जब मिरज़ा तकी आये हैं, उनको कहा -

कुदरती काबा की मैहराब में तू सुन गौर से।

यह खुदा का घर है, कुदरत ने बनाया है, और यह मैहराब है (माथे पर इशारा करके) -

आ रही धुर से सदा तेरे बुलाने के लिये ॥

मिर्ज़ा तकी को होश आ गई, बात क्या थी, बन क्या रही है। अगर कोई भाई कहते हैं कि सिर्फ उस परमात्मा को आवाज पहुँचाने के लिये हैं, तो अरे भई कोई वह बैहरा है ? समझे! कहीं दूर थोड़े ही बैठा है कि जो आवाज देनी है ! वह तो हमारी आत्मा की आत्मा है।

आपको पता हो, भगवान कृष्णजी के वक्त जब द्रौपदी का चीर-हरण हुआ है, तो जब वह उतारने लगे, सिर से साड़ी उतर गई, तो फिर भगवान पहुंचे हैं। उसने पुकार की, भगवान ने रक्षा करनी थी, आ गये। चीर हरण नहीं होने दिया। पूछने लगी कि भगवान मेरी सिर से जब साड़ी उतर गई थी, तो मेरी तो बेइज्जती हो ही गई थी, आप पहिले क्यों नहीं आये ? समझाने का यह एक तरीका है। भगवान कहने लगे, अरे भई तुमने किसको पुकारा था ? कहने लगी (द्रौपदी) ब्रजवासी कृष्ण को! तो बृज ही से आना था मैंने ? अगर तुम आत्मा की आत्मा समझते तो उसी वक्त आ जाता । अब परमात्मा है कहां, हम उसको देख कहाँ रहे हैं ? हमारे रस्मों-रिवाजों में

उसकी थोड़ी थोड़ी झलकें तो हैं, मगर आमिल लोगों के बगैर समझ में नहीं आ रही हैं। तुम पर्बत पर बैठे हो, यही मुनारा है, यहां बाँग देते हो। बाँग तो हो रही है। तुमने सिर्फ बाहर से हट कर उसको सुनना था। बात तो यह है। जब मैं गया ना पाकिस्तान में, मैंने यही चीज उनको पेश की,तो वह कहने लगे भई है तो असल मुसलमानी यही। भई सबके लिये एक जैसी है। तो कबीर साहब कहते हैं, भई ऐ मुल्ला ! तू मुनारे पर चढ़ कर जो आवाज देता है, तो क्या वह खुदा बैहरा है? जैसे स्वामी राम तीर्थ ने कहा, अरे भई तुम आसमानों में समझते हो उस खुदा को, तो उसको तो ज़ुकाम हो जायेगा। समझे ! बादलों में रहता है, जुकाम हो जायेगा। यह लोगों की Fallacies (भ्रम) है, मुआफ करना असल की नकल जो रह जाती है, वह (अनुभवी पुरुष) उस पर थोड़ी रोशनी डालते हैं। बुरे भले से गरज नहीं भई With due deference to all (सबके लिये अपने दिल में आदर भाव रखकर) हकीकत को खोल कर बयान करते हैं कि बात क्या थी, बन क्या रही है।

मसजिद भीतर मुल्ला पुकारे ।

''मसजिदे ई दिल,'' यह मसजिद है। यह है मुनारा(माथे पर इशारा करके) यहां बांग आ रही है, सुनो। तूने बाहर चिन्ह बनाया था, बाहर का चिन्ह तो पकड़ लिया, जिसका नमूना बनाया था, उसको भूल गये। जैसे लड़कियाँ होती है, छोटी उमर में गुडी गुडे बना कर ब्याह शादी की रसमें सीखती हैं। जब शादी अपनी हो जाती है फिर गुडी गुडे कहां रह जाते हैं ? मकान एक बनाया, उसका माडल (नमूना) बनाया, मकान बन गया,माडल कहां रह जाता है ? सिर्फ समझाने बुझाने के लिये यह चीजें पेश की जाती हैं। जब तक आमिल लोग रहते हैं, वह समझाते रहते हैं, जब आमिल न हो तो फिर लकीर की फ़कीरी रह जाती है। आप देखिये, मन्दिरों में देखिये क्या होता है ? वहां पर ज्योति जगाते हैं, घन्टे बजाते हैं। ठीक है। इसी का नमूना है। इसमें ज्योति का विकास भी है, और ध्वनि भी हो रही है प्रणव की। इसका नमूना बनाया था समझाने बुझाने के लिये। ऐसी ज्योति तुम में है, ऐसी ध्वनि तुममें हो रही है। जब आमिल लोग मिलें अन्दर सचमुच ज्योति को देखने वाले बन गये, प्रणव की ध्वनि सुनने वाले बन गये। फिर बाहिर -

नकली मन्दिर मसजिदों में जाये सद अफसोस है।
कुदरती मसजिद का साकिन दुख उठाने के लिये ॥

Elementary step (शुरु के कदम) है, ठीक है। स्कूल में जाना है, तखती, कलम, दवात ले जाओ। ठीक है। मगर सारी उमर तुम तखती, कलम, दवात ही लेते रहोगे ? अब आप देखिये अनुभवी पुरुषों की तालीम क्या है ? वह सिर्फ Comparative values (हर चीज की सही कीमत) पेश करते हैं कि सचमुच गुरु के बगैर गति नहीं। यह सब चीजें बनाई तो बड़े Noble purpose से गई थी। समझाने बुझाने के लिये। जब आमिल लोग न रहे, लोग लकीर के फकीर बन के रह गये।

चूंटी के पग नेवर बाजे सो भी साहब सुनता है ।

कहते हैं भई तुम इस ख्याल से अगर लेते हो कि प्रभु सुन ले, अरे भई चींटी की आहट का वह पहिले सुनता है, हाथी की चिंघाड़ पीछे जाती है, वह इतना नजदीक है तुम्हारे कि उससे ज्यादा नजदीक और कोई चीज नहीं है। वह हमारा जीवन आधार है। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, अरे भई तुम इस ख्याल में हो, जिस Noble purpose से यह चीज बनाई गई थी, उस की तरफ नजर करो। वह तो तुम्हारी आत्मा की आत्मा है। बयान करने का मतलब यह है कि वह इतना नजदीक है। तुम्हारा साहब कैसा है ? पहिली तारीफ यह, कि वह तुम्हारी आत्मा की आत्मा है। उससे ज्यादा नजदीक और कोई चीज नहीं है। फिर ख्याल के आने से भी वह फ़ौरन समझता है। गुरुबाणी में आता है-

बड़ी बड़ाई बुझे सब भाव ।

उसमें बड़ाई इसी बात की है कि तुम्हारे भाव को भी समझता है। भाव आया नहीं कि समझा नहीं। जबान से उच्चारण करना या कह दो भाव अन्तर में होता है ना उनको उपजते वक्त, Nearest चीज है कि नहीं, कहते हैं उसको भी वह समझने वाला है, इतना नजदीक है। He feels, वह देखता है। तुम्हारा साहब ऐसा है भई। हाजर-नाज़र है, हाजर-नाज़र, जो बाहर की Sense से समझोगे तो भी दूरी है, याने तुम्हारे भाव के उपजने की जगह को भी देख रहा है, क्या उपज रहा है,और क्या है। ''बड़ी बड़ाई'', किस तरफ आगे रुचि जाती है, उसको भी देखने वाला है। आप समझें परमात्मा कितना नजदीक है। जिसको हम बाहर मन्दिरों में, तीर्थों पर बाहिर मुखी साधनों में तलाश करते हैं, ग्रन्थों पोथियों में, अरे भई वह तुम्हारे भाव को भी समझने वाला है। जहां आगे Trend (झुकाव) जाने वाला है, उसको भी जानने वाला है। फिर कहां उसकी पूजा करनी चाहिये ? आप बतायें। अपने भाव से ''भाव भक्ति रीझे भगवान'' समझे ! वह भाव भक्ति से राजी होता है। वही उसके दर पर परवान होता है।

जात पात पूछे न कोय।
हर को भजे सो हर का होये ॥

लोग पूछते हैं, परमात्मा की पूजा कहां करो ? कहते हैं वह तुम्हारे भावों के पीछे में भी उकसाहट देने वाला है। उसको भी जानिने वाला है। कितना नजदीक है, आप कहां रह रहे हैं। Comparative values दे रहे हैं, परमात्मा को ऐसा जानों ।

चिंयूटी के पग नेवर बाजे, सो भी साहब सुनता है।
पण्डित होय के आसन मारे लम्बी माला जपता है ॥

पण्डित हुआ, भेख धारण किया, खास स्थान पर बैठ गये, माला ले कर बैठ गये, माला तो लोगों को दिखलाते हो भई, दिल की माला फेरो तब काम बने,

माला तो कर में फिरे और जीभ फिरे मुख मांहि।

समझे ! फिर आगे कहते हैं -

मनुवा दैंह दिस धांवदा यह तो सिमरन नांहि ॥

याद तो वही है, जो दिल में याद बसे। माला फेरते समय मन दौड़ता रहता है, माला फिरती रहती है, Habit (आदत) बन जाती है ना ! कबीर साहब ने इसीलिये कहा -

माला मोसों लड़ पड़ी काहे फिरावत मोहि ।

माला मुझसे लड़ने लग गई कि भाई मुझको तुम क्यों फिराते हो ? कहते हैं-

मन का मनका फेर दे तो राम दिखाऊं तोहि ।

मन के मनके को फेरो भई, दिल के भीतर में उसको भाव से याद करो, वह तुम्हारे अन्तर है, वह सुनता है, बाहर बनाया था चिन्ह अरे भई किसी तरह तो उसकी याद हो। मुंह में राम-राम बगल में छुरी, एक Acting posing ने दुनिया को बहुत गुमराह कर रखा है। बाहर Elementary steps थे, जिसका मन बहुत दौड़ता है, अरे भई कुछ साधन ले लो। Elementary steps हैं, कुछ तो ख्याल रहेगा ना। मगर हाथ फिरता रहे, मन कहीं दौड़ता रहे, फिर वह माला किस काम की ? वह कहते हैं कि माला, कहते हैं, मुझसे लड़ने लग गई कि तुम मुझे क्यों फिराते हो ? मन के मनके को फिराओ, अभी राम तुझ को दिखा दूं। राम है कहां भई ? वह तो तेरी Self का Overself है। समझे ! उसमें भाव उठा नहीं कि वहां पहुँचा नहीं। आप बात समझे ? बाहर चीज की Values क्या है ? और यह क्या है? तुम्हारा साहब कैसा है भई ? ऐसा है ! क्या बाहिरी Elementary steps से वह मिलता है ? यह तो इन्द्रियों के घाट से ताल्लुक रखते हैं ? वह अदृष्ट और अगोचर है। जब तक उसी Level पर तुम नहीं जाओगे, तुम उसको पा नहीं सकोगे। समझे ।

एवड ऊचा होवे कोय ।
तिस ऊंचे को जाने सोय॥

उसी Level पर जाओगे, देखोगे ना। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, कि बाहर Settings बाहिरी Show, बाहरी जो सामान Elementary बनाया था, वह सिर्फ शुरू में थे, असल बात हम भूल गये। माला ली है तो माला में उसकी याद में ख्याल हो, ऐसी याद हो कि माला फेरनी भी भूल जाये, याद में इतने महव हो जाओ,बात तो यही थी। जैसे मशीन चलानी होती है न, एक दो चक्कर तो हाथ से देते हैं, फिर अपने आप चल पड़ती है।

वह सिमरे जिन आप सिमराये।

गुरु बाणी में आता है, असल सुमिरन है अपने आप जो दिल से हो, अपने आप जारी हो जाये वही असल सुमिरन है। बाहर की माला का फेरना यह पहिला कदम था, एक दो चक्कर लगाने के लिये, और कोई बात नहीं। फिर अपने आप चल पड़े।

आपको पता है, गुरु नानक साहब थे। मोदी खाने में मोदी का काम कर रहे थे। किसी को तोल कर गल्ला दे रहे थे, तो तोल कर, एक, हर का एक, दो, तीन, चार,पाँच छः, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह, बारह, तेरह पर जब आये तो तेरह पर महव हो गये, तोलते जा रहे हैं, उनको पता नहीं कि हम क्या कर रहे हैं। अब समझे असल में मतलब क्या था इसका ? माला फेरना शुरु करो, भई चलो एक चीज की याद की तरफ,बाहर से ख्याल को हटाओ। मगर ऐसे याद में महव (लीन) हो जाओ कि हाथ रह जायें, सब कुछ रह जाये, सुरत को जबान में करो सुमिरन। कई किसमके सुमिरन होते हैं, याद रखो। एक जबान का सुमिरन, माला का सुमिरन सबसे पहिले, उससे बेहतर जबान का सुमिरन, उसको बैखरी कहते हैं। फिर जबान को तालू के साथ लगा कर जो सुमिरन करना है, उसको कहते हैं, मधिमा, उसके बाद हृदय से जो किया जाता है, उसको कहते हैं पश्यन्ति या पश्चन्ती। माला के सुमिरन से जबान का सुमिरन ज्यादा, कई गुणां ज्यादा फलदायक है। जबान से कण्ठ का सुमिरन उससे भी ज्यादा और हृदय का सुमिरन कंठ के सुमिरन से ज्यादा फायदामन्द है, और सुरत का सुमिरन सबसे आला है।

जिकरे रूही जुज फ़र्ने दरवेश नेस्त ।

रूह का या सुरत का जो जिकर है ना, सुमिरन, कहते हैं, वह आला दर्जे के फकीरों का है। तो सन्तों का मार्ग सुरत का मार्ग है। सुरत में उसकी याद को करो। बस। जब सुरत ही महव (लीन) हो जायेगी, हाथ कौन फिरायेगा ? माला कौन फेरेगा ? भई जिसम जिस्मानियत से भी ख्याल ऊपर आ जाता है। तो यह Elementary steps रह गये कि नहीं ? यहां Comparative values (जिस चीज की जितनी कीमत है उतनी कीमत उसको देने का) सवाल है। बाहर एक सिलसिला, मैंने जैसे अभी अर्ज किया है कि स्कूल में जाते हुए तख्ती, कलम, दवात ली, भई बैठ जाओ, हट हटा कर, नहा धो कर बैठ जाओ, हाथ में माला ले लो, यह न हो कि हाथ तो फिरता रहे, मन भागता रहे। मन को साथ रोको, मन का मनका फेरो, इतने महव हो जाओ कि हाथ रह जाये, जिसम रह जाये, ऐसा सुमिरन जो है-

तन थिर, मन थिर, बचन थिर, सुरत निरत थिर होय ।
कहें कबीर तिस पलक को, कल्प न पावे कोय ।।

अब आप समझे सन्तों का मार्ग क्या है ? महवियत और प्यार का सौदा है। महवियत, प्यार से याद, यकसूई (एकाग्रता) लाती है। प्यार कहाँ बसता है ? आत्मा में ? जो प्यार से याद होगी तो आत्मा में याद होगी कि नहीं ? वहाँ और कोई चीज नहीं। एक सुरत कहो, Electric connection कहो, कहीं हो और Switch off उस तरफ से हो जाये, तो यह मशीन Standstill (खड़ी की खड़ी) रह जायेगी कि नहीं ? सुरत के आधार पर यह इन्द्रिये, मन, बुद्धि, सब चल रहे हैं, अगर सुरत से सुमिरन हो तो मन-बुद्धि कहां रह जायेंगे ? आप समझे ! बड़ी मोटी बात। महात्माओं की बाणियां पढ़ने से नहीं, उसकी Basic ground पर जाओ यह क्या कह

रही हैं। क्या निन्दा कर रहे हैं ? अब जो मैंने पेश किया आप को, यह कोई निन्दा है ? Very clear-cut (स्पष्ट) चीज है, Elementary से एक कदम उठाया है, आगे उठाओ। जब तक सुरत की Science से कोई वाकिफ़कार हस्ती नहीं मिलेगी, सारी उमर तुम करते रहो, फल तो जरूर है, अच्छे कर्म का अच्छा फल, स्वर्ग भी मिलेगा, बैकुंठ भी मिल सकता है, अच्छी जूनी भी मिल सकती है,मगर महवियत या यकसूई या उसका मिलाप जो है वह अभी दूर है। सुरत का मिलाप होगा प्रभु से, महान सुरत से। न मन का, न बुद्धि का, न इन्द्रियों का। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, कि बाहर जो बनाया है भेख, देखिये एक मिसाल करते है बयान मैं आपको अर्ज करूं। एक था कोई यह होते हैं ना ख़ाकरोब, चूहड़े लोग, उसके दिल में यह ख्याल आया कि बादशाह की लड़की है, इससे मेरी शादी हो जाये। बात तो बड़ी नामुमकिन (असंभव) है ना। किसी ने कहा भई ऐसा करो। वह उससे मिली। बयान समझाने की गर्ज है। उसने कहा भई तू ऐसा कर,मैं तेरे पास तो आ नहीं सकती, अगर तू साधु का भेख बना ले तो मैं फिर आपके दर्शनों को आ जाऊँगी। चलो साधु का भेख बना लिया। बैठ गये। मशहूर हो गये साधु बैठे हैं। बिलकुल समाधी स्थित है। बीच में वह ख्याल है, तार बज रही है। ज्यादातर लोग, हमारे लोगों का भजन सुमिरन यही है. तार तो अपनी बज रही है, प्रभु कहाँ है ? ऊपर से नमाज पढ़ते हैं दिल में बुतों की याद ! फिर ! क्या बनेगा ? तो खैर वह गई दर्शनों को। दूर से आता देखा। दिल में ख्याल आया अरे भई मैंने अभी खाली बेख धारण किया है, उसका फल यह है कि एक बादशाह की लड़की मुझसे मिलने को आ रही है, अरे भई जिसका भेख धारण किया है, अगर उसी की याद में बैठ जाऊँ तो ? बात समझ रहे हैं भई ? सुरत का खेल है। प्यार से याद करो, प्रभु कोई दूर नहीं। दसवें गुरु साहब ने सब भेखों का जिकर करते हुये अपनी जगह पर, आखर क्या बयान करते हैं कहते हैं -

साच कहूं सुन लियो सबै ।
जिन प्रेम कियो तिन ही प्रभु पायो ॥

यह पूजा-पाठ, यह वह, करने की गरज क्या है ? कि हमारी सुरत में, हमारी आत्मा की आत्मा में, उसकी लगन बने। बात तो यह है। तो वह (प्रभु) हमारी आत्मा की आत्मा है। उस को पहिले जायेगा कि नहीं Connection फौरन ! देखिये हम क्या कर रहे हैं ? बाहर वहीं चीजें जो नमूने बाहिर बनाये थे Elementary steps के लिये, उसी में हम फंस रहे हैं। जो बीमारी थी, उसको दूर नहीं किया है। जब तक मन न खड़ा हो तब तक क्या बन सकता है ? एक महापुरुष ने कहा -

गर तो दारी दर दिले खुद,
अजमे रफ़तन सूये दोस्त ।

कि अगर तुम अपने दिल में प्रभु के पाने का पक्का इरादा रखते हो, तो क्या करो ?

यक कदम बर नफ्से खुद ने,
दीगरे दर कूये दोस्त ॥

कि एक कदम तो अपने नफ्स क्या, मन पर रखो। इसको खड़ा करो। दूसरा जो कदम उठाओगे, प्रभु की गली पहुंच जायगा। अब मन कैसे काबू में आये ? बाहिरमुखी साधनों से तो यह काबू आता नहीं, Temporary (थोड़ी देर को) आता है, फिर भाग जाता है। यह (मन) ताकत कहां से लेता है ? सुरत से ! कोई ऐसा साधन हो जो सुरत से हो -

जिक्रे रूही जुज फ़ने दर्वेश नेस्त ।

रूह का जिकर आला दर्जे के फकीरों का है, सुरत का जिकर। अब सुरत का सुमिरन कैसे हो? सुरत का पता ही नहीं। अगर सुरत कही महव हो तो मन कहाँ रह जाये ? बात समझे कि नहीं। जबान के सुमिरन करने से, माला के सुमिरन करने से, बाहिरमुखी साधन करने से तो मन भाग सकता है। अगर जिससे वह ताकत लेता है, वही ताकत कहीं और लगी पड़ी हो, तो फिर? तुम ख्याल में महव बैठे हो, बड़े महव हो, बड़े प्यार से कोई आवाज देता है, तुम सुनते नहीं, कान खुले भी होते हैं। कई दफ़ा आँख खुली भी हो, ख्याल में महव बैठे हो, कोई नजर नहीं आता है, कौन है, कौन आया, कौन गया। तो यह सुरत का खेल।

सुरत का मार्ग लखवाव्रें।

इसी को Develop करना है, इस सुरत को यकसूई (एकाग्रता) में लाना है। कई किसम की ऋद्धियां सिद्धियां आ जाती हैं, दूसरों की Healing (रोग निवारण) कर सकता है, Mind reading (मन का हाल जानना) कर सकता है, यह कर सकता है, वह कर सकता है, मगर आगे नहीं जा सकता है। जिस चीज ने Our very self की self को, (हमारी आत्मा की आत्मा को) Overself, प्रभु, को जानना है,वह अगर Lower pursuits (छोटे कामों) में लग जाये तो Retard होगी कि नही Progress (रस्ते में रूकावट पड़ेगी कि नहीं ?) वैसे उसके जीवन से कईयों को बगैर Direct करने सुरत के फ़ैज (लाभ) पहुंचता रहता है, मगर वह सहज में होता ही रहता है, होने दो खुद। अगर वहां Conscious जो उस चीज में लग गया तो रुकावट बन गई। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, कि भेख धारण किया। ठीक। कहते हैं, जिस भेख के धारण करने से खाली रह जाता है, जिसको मैं चाहता हूं बादशाह की लड़की को, वह आ सकती है। अरे भई उसी का भेष धारण क्यों न करे जो शहिन्शाहों का शहिन्शाह है ?

पण्डित होय के आसन मारे, लम्बी माला जपता है।
अन्तर तेरे कपट कतरनी, सो भी साहब लखता है ॥

वह देखता है, तुम किस भाव से बैठे हो तुम प्रभु की याद में बैठे हो ''हे महाराज मेरा बच्चा राजी हो जाये'', ऊपर से राम राम जप रहा है, दिल में यह कि मेरा बच्चा बीमार है, राजी हो

जाये, मेरी रोजी नहीं खुलती वह खुल जाये। यह आप देखते हो, आप में वह चीज नहीं है, ऐसे ही बनावट की बात कर रहे हो, दुनिया को धोखा दे रहे हो। वह (प्रभु) भी देखता है। समझे!

लोग पतीने कछु ना वोहे, नाही राम अयाना।

लोग तो खुश हो जायेंगे, बाहरी Acting posing से वह भी Temporary, थोड़ी देर के लिये। आखर भेद खुल जायगा। आज Gurudom क्यों बदनाम है साधुओं सन्तों का ? कि लोग Acting posing करते हैं, जो इन्द्रियों के घाट पर हैं वह गिरते हैं, अवश्य गिरेंगे। समझे! नतीजा क्या होता है ? जब वह (ऐसे ढोंगी लोग) जब गिरते हैं वह तो लोग यही कहते हैं, It is all gurudom. गुरु का कसूर नहीं है, बनावट बन रही है, दिल में कुछ और है, ऊपर में कुछ और है। नतीजा क्या बना ? अन्तर में कपट है, बाहिर दिखावा है, दूसरों के लिये ईर्षा, द्वेश है, अन्तर में मान बड़ाई भरी है, मेरे जैसा कौन है। याद रखो एक सन्त और ऐसी हस्ती जिसने उस गति को नहीं पाया है, उसमें बड़ा भारी फरक होगा, तरजे बयान में। सन्त कभी भूल कर भी नहीं कहेगा कि मैं यह कर सकता हूं, या कर रहा हूं। वह कहता है वह (प्रभु) कर रहा है। With due deference (सब के लिये मन में आदर भाव रखते हुए) यह बात मैं कहूंगा कि तरक्की तो होती है, तरक्की के लिये जो दसवी बन गया, बी.ए.बन गया, ठीक है। मैं पूर्ण अवस्था का जिकर कर रहा हूं। वह (पूर्ण पुरुष) तो देखता है कि -

मेरा किया कछु न हो, जो हरि भावे सो हो।

कबीर कूकर राम को मुतिया मोको नाओं।
गले हमारे जेवडी जैं खैचे तैं जाओं ।।

यह अवस्था बन जाती है। अब दिल में कुछ और हो, कपट हो। तो महापुरुष क्या कहते हैं, कि पहिले किसी चीज को धारण करो, फिर कहो। तो क्या करो -

आप कमाओ औरां उपदेश

पहिले आप कमाओ फिर दूसरों को उपदेश दो। पहिली बात ! आप कोई कमाई नहीं की, फरज करो पांचवी तक की है, बातें दसवीं और Graduate की करते हो, फिर वह भी Acting posing हो गया कि नहीं ? जितना तुम्हारे पास है उतना कहो कि यह है भई, आगे का नहीं पता, क्षमा करो। Clear-cut (स्पष्ट बात) हो। अन्तर में तो दुनिया की जहरियत (विष) माया की जहर चढ़ी पड़ी है, अन्तर विष है।

अन्तर बिख मुख अमृत सुनावे।

माया की जहर चढ़ रही है, मान बड़ाईयाँ हैं, लब लालच है, ईर्षा द्वेश है, दिल में और, ऊपर से और है, तो मुंह से लोगों को अमृत बचन सुनाता है। उसका नतीजा क्या होगा ?

जमपुर बान्धा चोटा खावे ॥

महापुरुषों का फैसला है। यह याद है तुलसी साहब ने कहा है कि जो मुंह से ब्रह्म ब्रह्म दुहराते हैं, और इन्द्रियों के गुलाम हैं, मन इन्द्रियों के, ऐसे लोग ब्रह्म ब्रह्म करते हुये भी नरकों में जायेंगे। समझे ! जब तक हृदय की हालत बदलती नहीं तब तक काम नहीं बनता है-

रहत अवर कछु और कमावत।
मन नहीं प्रीत मुख हरि गुण ध्यावत ॥

रहत तो कुछ और है, उसकी जो रहनी है और तरह की है, फिर ''मन नहीं प्रीत मुख हरि गुण ध्यावत'' दिल में तो प्यार दुनिया का है, हे परमात्मा मैं तेरे बगैर नहीं रह सकता, अरे भई दिल तो दुनियां की मोहब्बत में गिरफ्तार है ।

''तो आशिके नानी।''

समझे ! तू तो रोटी और बाहर और चीजों का आशिक है, प्रभु का प्यार, मुंह से Acting posing (दिखावा) करता है, स्वांग बनाता है, वैसे ही हेकें (स्वर) निकलता है, बाज़ वक्त दो आंसू भी बहा देता है लोगों को बताने के लिये। अरे भई जब तक अपनी आत्मा न रोये, मुआफ करना, आत्मा की पुकार जायेगी ना उसके पास ? You cannot pray to God with hands but with the spirit. तुम प्रभु को इन्द्रियों के घाट से, बाहरी Acting posing से उसकी पूजा नहीं कर सकते, सुरत से कर सकते हो, आत्मा से। जो उभार आत्मा में मिलेगा, अवश्य उसकी रसाई होगी, उसकी परवानगी होगी। तो देखने की बात यह है कि हम कर नहीं रहे।

जाननहार प्रभु प्रबीण ।
बाहर भेख न काहू दीन ॥

हमारे हृदय की वह जानने वाला है, प्रवीन प्रभु है, बाहर भेख बना कर उसको हम खुश नहीं कर सकते हैं। देखो ना, अगर Acting posing स्वांग बनने से बादशाह की लड़की मिल सकती है, अरे भई उसका अगर सचमुच स्वांग बन जाये तो बेड़ा पार हो जाये कि नहीं ? हम सब धोखा दे रहे हैं, सच्ची बात तो यह है।

औरां उपदेश आप न करे ।
आवत जावत जम्मे मरे ॥

बस ! कोई लिहाज नहीं किया। जो औरों को उपदेश देता है आप नहीं करता, वह आता रहता है। और अगर ऐसे के पीछे अगर तुम लग भी गये तो क्या होगा ? जिधर वह जायेगा तुम जाओगे। Blind leads the blind, both fall into the ditch. जिन्दगी बड़ी बेशकीमत है भई। तो बात क्या है ? यह Sincerity का सवाल है। Be sincere to your own self. अपने आपके सामने सच्चे बनो। गुरु पावर भी तुम्हारे अन्तर है, प्रभु भी तुम्हारे अन्तर है। जो उसके सामने सच्चा है, उसको किसी से डरने की जरूरत नहीं।

गुरु को सिर पर राखते चलते आज्ञा मांहि ।
कहे कबीर तिस दास को ।
तीन लोक डर नांहि ॥

Sincere बनो। उस Power को धोखा न दो। तुम उसके दर पर पर्वान हो जाओगे। हम दुनिया को धोखा देते हैं, वह प्रभु तो धोखा नहीं खा सकता है। तो इसलिये कहते हैं, जो आप खुद नहीं करते ऐसे लोगों की क्या गति होगी ?

उपदेश करे आप न कमावे ।
तत सबद न पछाणे ॥

उपदेश तो करते हैं, आप करते नहीं, लोगों को कहते हैं, ऐसा करो, आप नहीं करते। कहते हैं कि वह सबद के, क्या परमात्मा Into being (इजहार में जो आया है) उसके तत्व को नहीं पहिचान सकते हैं। बड़ी साफगोई है। उसको तो Sincerity चाहिये। बस। जो Sincere हैं उनके लिये है, जिनकी नीयत रास है।

घर ही बैठियां शौह मिले जे नीयत रास करे।

Sincerity से मुराद है, नीयत का रास करना। अगर यह बन जाये परमात्मा का पाना कोई मुश्किल नहीं, वह तो आगे ही मौजूद है भई। तुमने Acting posing (स्वांग रचना) करके गुन्जलदार हालतों में अपने आपको फंसा रखा है। इधर हटो तो वह तो आगे ही मौजूद है। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं -

पण्डित होय के आसन मारे, लम्बी माला जपता है।
अन्तर तेरे कपट कतरनी, सो भी साहब लखता है ॥

मुंह में राम राम बगल में छुरी, ऊपर राम-राम, बाणी पढ़ रहा है, पैसा आ जाये जल्दी से। वह (प्रभु) तो भाव को देख रहा है,तुम्हारे दिल में भाव क्या है। तो दुनिया को तो धोखा दे सकते हो, उसको धोखा नहीं दे सकते। रसोई नहीं होगी। थोड़ी बहुत झलक आ गई,उसमें मस्ती आ गई, जो मर्जी कहते जाओ। जो Conscious contact से Mouthpeice of God (प्रभु का मुख) बनना है, वह कुछ और चीज है, बड़ी ऊंची गति है।

ऊंचा नीचा महल बनाया, गहरी नींव जमाता है।
चलने का मनसूबा नहीं, रहने को मन करता है ॥

याने बनावट बना कर पेश करता है, चलने की नीयत नहीं,मनसूबे बान्धता है मगर चलता नहीं है, कहता है करता नहीं, ऐसे पुरुषों के पीछे तुम लग कर क्या करोगे ? वह जितना कुछ थोड़ा Develop करता है, वह थोड़ा पांचवी जमात का जो उस्ताद है, वह आपको पांचवी पढ़ा

देगा, छठी पढ़ा देगा, अरे भई बी.ए. तो नहीं बना सकेगा ना। तो इसलिये कहा कि आत्मतत्व के बोध के लिये महापुरुष पूर्ण पुरुष चाहिये। पूरे गुरु की महिमा गाई है महापुरुषों ने -

पहिले मन परबोधो अपना,
पाछे अवर रिझाओ ।

पहिले अपने आपको ठीक करो भई, फिर दूसरों को रिझाने की कोशिश करो।

राम नाम जप हृदय जापे,
मुख ते सगल कमाऊं ।

अन्तर में उसी की याद बस रही हो जिस के, फिर जबान से कहे तो उस का कुछ असर भी हो। जैसी अन्तर में बस रही हालत होगी वही चीज Charge हो कर निकलेगी ना। इसीलिये कहा -

जिस के अन्तर बसैं निरंकार ।
तिस की छीक तरे संसार ।

बात तो यह है, जो Mouthpiece of God है (प्रभु में अभेद है) वह आपको उसके अनुभव में मददगार हो जायेगा, Way up करने का। जो कहीं भी (रस्ते में) उलझा पड़ा है, जितना तो वह गया है, उतना तो कर देगा, ज्यादा नहीं। कई पहिले चक्र पर बैठे हैं, आपको ऋद्धियां सिद्धियां दे सकते हैं, वर श्राप दे सकते हैं, वहां तक ले जा भी सकते हैं, हो सकता है, वह एक दूसरे के जो Way-up के संस्कार हैं ना, Vibrations हैं, उसमें थोड़ी बहुत Help (सहायता) भी मिल जाती है, जो भी ध्यान करे उसको मगर वहां तक ही जहां तक वह गया है। उससे ऊपर तो नहीं! हमारे हजूर (बाबा सावनसिंहजी महाराज) फरमाया करते थे, कि जैसी रसाई का गुरु मिलेगा वहां तक तुम तरक्की कर सकते हो। और बात भी ठीक है। इसलिये महापुरुषों ने पूरे गुरु की महिमा गाई है। नहीं तो दुनिया की हालत क्या है ? आलिम भी बने, फाजिल भी बने, लेकचरार भी बने, ग्रन्थाकार भी बने, Acting posing भी किया, दस बीस, पचास आगे नौकर, डो डो करने के लिये भी रख लिये, हुआ क्या ? फरमाते हैं -

कड़छियां फ़िरे सवाऊ न जाणन सन्जियां।

कड़छियां हलुवे में फिर रही है, उस के रस को तो नहीं जानती है ना। तो इसलिये क्या कहते हैं, क्या करो ?

वही मुख दिसन नानक रते प्रेम रसे ।

जो उसके प्रेम में रसे पड़े हैं ना, वैसा Charge हो जायेगा। तो मतलब Live करने का है, Live and then speak बनावट न करिये, Acting posing न करिये। दुनिया कब तक रीझेगी ? आखर Cat must be out of the bag इसलिये साधुओं सन्तों का नाम बदनाम

हो रहा है। यह जो मुश्किल आज है, आगे भी थी। यह कबीर साहब की बाणी कह रही है। यह (पूर्ण पुरुष) बड़े Good observer (पैनी दृष्टि रखने वाले) होते हैं, Through and through चीजों को देखते हैं (तह तक पहुंच जाते हैं) कि बात क्या है बन क्या रही है।

ऊंचा नीचा महल बनाया,
गहरी नींव जमाता है ।

अपनी तरफ से बड़ी बुनियादें पक्की करता है, यह भी रहे, Side safe यह भी रहे, ताकि हमारा पोज (ढोंग) न खुले, मगर कब तक नहीं खुलेगा ?

जिन के अन्तर प्रतीति नहीं,
सो क्या कथा ज्ञान ।

जिनके अन्तर खुद Conviction आस्था नहीं है, Conviction देख कर आयेगी, और फिर देख भी लो तो यह कोई जरूरी बात नहीं कि दूसरों को भी ले जा सकोगे। साथ साथ Commission (प्रभु की ओर पर्वानगी) भी हो फिर तो बात ठीक है, नहीं तो अपना बेड़ा तो पार हो जायेगा ना। फिर दूसरों को न लो। इतने लो जितने तुम ले जा सकते हो। या सर्मथा है, जहाज है, तो लाद कर ले जाओ कोई बात नहीं। यह तो Commission पर है। यहां पर आप देखेंगे हम Prime Minister (प्रधानमंत्री) President वगैरह चुन लेते हैं, कसरत राय (बहुमत) से, अरे भई यह इन्सानों की चीज तो है नहीं, यह तो Commission है परमात्मा की तरफ से होती है, जिसको यह दी जाये वह कहीं भी जायेगा सब इजत करेंगे,क्योंकि दिल से निकली बात दिल को Appeal करती है ना। उसमें Acting नहीं, Posing कपट नहीं, बनावट नहीं, कुछ नहीं, सही नजरी है, बस। As it comes जैसा है, वैसा ही पेश कर रहा है।

चलने का मनसूबा नाहीं रहने को मन करता है ।

ख्याल तो दिल से यही है कि यहां रहना है, बड़ी जायदादें बन जायें, वह बन जाये, ख्वाहे दुनियादार है मुआफ करना, ख्वाहे परमार्थ में है। अगर दिल की कैफियत यही है तो नतीजा क्या है ?

जहां आसा तहां बासा ।

बस। याद रखो, मैं तो यह समझता हूं कि Average साधारण दुनियादार से जो परमार्थ में हैं, वह ज्यादा दुनियादार हैं। समझे। वह मठों के मठ बनाने के फ़िकर में हैं, Acting posing आगे पीछे, दौड़ भाग, Propaganda, एक चीज की गहरी जमीन बनाना चाहते हैं, खड़े होने को। Temporary (थोड़ी देर को) कामयाब हो भी जायें तो क्या मिलेगा भई ? आखर पछताना पड़ेगा। जो उनके साथ लगेंगे उनका भी पाप उनके सिर पर है। भई रूह कांपती है, इस नजरिया को देख कर रूह कांपती है। दुनिया कितनी बहादुरी से मुआफ करना सब कुछ सिर पर लिये जा रहे हैं। फरीद साहब कहते हैं -

लोग अपो आपनी पई मैं आपनी पई ।

जो Sincere (सच्चा) है, देखता है, वह तो घबराता है, मुआफ करना। जो Sincere नहीं, चलो खा लो, पी लो, जो होगा देखी जायेगी। मरते हैं तो मर ही जायेंगे, क्या होगा ? जायदाद तो बना लें। कहने को तो कहते हैं त्याग कर दो, चलो आगे दुनिया से, बना रहे हैं जायदादें, दरपर्दा कई हिस्सादार साथ बना लेते हैं, ताकि पोज न खुले। पर कब तक ? दूसरों को क्या मिलता है। चलो Acting posing होता रहे, With due deference हमारी उससे गर्ज नहीं, हमारी गर्ज यह है कि उस महात्मा से आपको मिलता क्या है ? क्या उससे तुमको Way-up होता है ? क्या Self-analysis (पिन्ड से ऊपर आने का) Experience (अनुभव) मिलता है ? क्या Inner eye (अन्तर की आँख) खुलती है ? Do you get some capital out of it ? कुछ पूंजी मिलती है आपको ? अगर मिलती है तो अच्छी बात है, अगर मिलता ही कुछ नहीं है ? इसलिये मैं कहा करता हूं हमेशा ही, कि दुनिया में भी Black market है, मगर परमार्थ में इतनी Black market है। दुनिया वाले तो फिर भी आपको दो चार, छः आने रुपये में देंगे, परमार्थ में देते भी कुछ नहीं और गर्दनों पर सवार हैं। जागृत पुरुष आकर सही नजरी को पेश करते हैं। उनका किसी से द्वेश नहीं, सबसे प्यार है, आत्मा से प्यार है। वह देखते हैं कि लोगों की गति क्या हो रही है, इसलिये Clear-cut (साफ) पेश करते हैं, बगैर किसी करख्त (कड़वी) जबान के। जो चीज पेश की जा रही है, इसमें कोई Confusion तो नहीं ना। एक Clarity है। उनसे भी प्रेम है कि जो- हैं तो आखर आत्मा देहधारी कि नहीं- मगर जो Sincere लोग हैं,

चलने का मनसूबा नाहीं, रहने को दिल करता है।
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, गाड़ जमीं में धरता है ॥
जिस लैना है सो लै जाय है, पापी बैह बैह मरता है ।

कौड़ी कौड़ी इकट्ठा करता है,जमीन में दबाता है, किसी को पता न लगे। अरे भई लेने वाले ने तो लेही जाना है। समझे ! वह कहते हैं -

कतरा कतरा जमा किया रब्ब रुड़ायो खूपा ।

पाकिस्तान बना, क्या आगे की चीजें सब खत्म हो गई कि नहीं ? आग लग गई, खत्म हो गया। डाकू आये लूट कर ले गये। क्या है -

पापां बाझों होय न इकठी ते मोयां नाल न जाये ।

अरे भई बांट कर खाओ। तो सिख भाईयों में दो ही असूल रखे हैं। अरे भई हर एक के सामने महापुरुषों ने अपने अपने तरीके से रखे हैं -

नाम जपो और वंड छको।

बांट कर खाओ। बांट कर खाना हो दुनिया में कोई दुख न रहे। हम congeal (संकीर्णता)

करना चाहते हैं। समझे! आप खाना चाहते हैं, दूसरों की Cost पर। यह दस्वंध (आमदनी का दसवां हिस्सा) वगैरा देने का जो रिवाज है उसका मतलब क्या था ? यही कि कुछ Portion (हिस्सा) दूसरों के लिये बांट कर खाओ। और कुछ मतलब नहीं। कितना Portion बान्टो, अरे भई जितना भी कर सको, चालीसवां हिस्सा रखो, सोहलवां, बीसवां, दसवां, तो यह रिवाज है ना। यह बड़ी पुरातन रीति चली आती है। याने कुछ न कुछ अपनी आमदनी से निकालो। हमारे हजूर (बाबा सावनसिंहजी महाराज) थे। कई दफा बाबा काहन का जिकर फरमाया करते थे। मैंने भी उनके (बाबा काहन के) दर्शन किये हैं। मैं पढ़ा करता था उन दिनों में। उनके पास जब जाया करते थे, दस रूपये दे आते उनको। उनका क्या कायदा था, छोड़ गये दूसरा उठा कर ले गया। मस्त फकीर थे, नंग धड़ंग रहते थे। एक कुरता पहन रखा है, आग जल रही है, पंखा झल रहे हैं। लोग आते, कुछ दे जाते, कोई ले जाता। जब एक बार गये, यह (हजूर) Field service पर रहे थे, रुपये काफी मिल गये, Arrear (बाकी रकम) बड़ा काफी मिला। जाते हुये उन्होंने दस रुपये रखे , तो कहने लगे (बाबा काहन) हमने तो भई बीस चिट्टे चिट्टे (सफ़ेद) लेने है। कहने लगे (हजूर) बाबा तुम लालची हो गये हो। कहते हैं, नहीं, मैं लालच नहीं करता। मैंने क्या करना है। तेरी कमाई में जहर जो शामिल है ना थोड़ी बहुती, जो Due नौकरी नहीं की, Undue उसमें बातें की है, उसके लिये आज ज्यादा पैसे लाये हो, ज्यादा दे जाओ। उसी वक्त दूसरा उठा कर ले गया। आप समझे ! महात्मा ने क्या करना है। संगत लाये, संगत खा जाये अपनी कमाई । तो जो देहध्यास में नहीं, उसको तो सब मुआफ है, मुआफ करना कोई आये आये, मिल जाये मिल जाये न मिल जाये। जो देहध्यास में है, देहध्यास जिनका नहीं टूटा, जो काम कर रहे हैं, वह अपनी कमाई पर खाते हैं। बड़ी मोटी बात। तो दस्वंध का देना बड़ा जरूरी है। हम नहीं देते। अगर देना शुरू हो जाये तो दुनिया में सुख न हो जाये ? यह देखिये, आप जितने बैठे हो, अगर सारे दस्वंध देने शुरू हो जाओ, गरीबों, गुरबों, जरूरतमंदो को बांट दिया जाये, कितना सुख हो जाये ? देखने में यह आता है, कि घरों वाले भूखे मर रहे हैं, भाई बन्धु भूखे मर रहे हैं, बेवायें हैं और मोहताज हैं, वह भूखे मर रहे हैं, और यह ऐश (मजे) कर रहा है। तो बांट कर खाना सीखो भई, यह परम्परा से चला आया है, यह कोई आज नया रिवाज नहीं है। कुछ न कुछ भूखे, नंगे,प्यासों, हाजतमन्दों को भी बांट कर खाओ। जहां लोगों को कुछ फ़ैज मिल सकता है, उनको दो। इसीलिये कहा, हम यह तो जानते नहीं, आपने दिया,दान किया, किसी ने शराब पी ली, किसी ने और बुरे काम में लग गया, फिर। उसको और बुरे काम में मदद हो गई ना। इसलिये कहा -

गुरु बिन माला फेरेते, गुरु बिन देते दान ।

जितना करते हो वह सब हराम है। जो Conscious (जागृत) आदमी है वह तो Sincere आदमियों को देगा। तो कहते हैं हालत क्या है -

कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, गाड़ जमीं में धरता है।
जिस लेहना है सो लैह जाई है, पापी बैह बैह मरता है॥

तुलसी साहब क्या फरमाते हैं, कि अगर बेड़ी में पानी भर जाये, तो दोनों हाथों से पानी बाहर फेंको नहीं तो डूब मरोगे। अगर जरूरत से ज्यादा माया आपको मिली है, तो उसको फेंको, नहीं तो डूब मरोगे। तरीका बयान करने का है। बात यही है कि बांट कर खाओ भई, यह सीखो। दुनिया में बड़ी दुविधा रही है। महात्माओं ने हर एक मजमून को लिया है, हमारी Living (जीवन) को-

सतवन्ती को गज़ी मिले नहीं, वेश्या पहिरे खासा है ।

कहते हैं, सतवन्ती नार जो है, उसको तो कपड़ा पहनने को नहीं है, कपड़े फटे हैं, और वेश्या के रेशमी कपड़े हैं, Toilette बरतती है। कहां से आते हैं पैसे ? आप भाईयों से। गौर से समझिये, उसकी कोई कमाई तो नहीं, तनखाह बान्धी हुई तो नहीं है। जो इन्द्रियों के भोगों में लम्पट हो रहे हैं, उनकी कमाई वहां जा रही है। क्या इससे बेहतर नहीं कि जो सचमुच मोहताज है, उनकी सेवा में दी जाये ? अगर लोग संयम का जीवन बना ले तो यह वेश्यायें न रहे। समझे! शरीफ़ बिचारे बहुत तंग है, जो माँग नहीं सकते हैं। जिन्होंने माँगने का पेशा बनाया है, वह तो हर एक जगह से ले लेते हैं। शरीफ़ आदमी मरता मर जायेगा, मगर हाथ नहीं फैलायेगा। ऐसे पुरुषों की कौन मदद करेगा ? तो Business बन गई है कई जगह पर। मेरे पास कई ऐसे भाई आते हैं, दफा रात को जहर खाने को लेते हैं, और रात मरना चाहते हैं बाल-बच्चों समेत। खाने को नहीं है। अगर आप बाँट कर खाना चाहे, फिर ऐसे लोगों की जिन्दगी बच जाय कि नहीं ? कहते हैं वेश्या को तो गहने भी है, रेशेमी कपड़े भी हैं, यह भी है, वह भी है, सतवन्ती नार घर में बैठी है,बस। भूखी मर रही है,कपड़ा पहनने को नहीं, कितने Good observer हैं। कोई नई बात नहीं पेश कर रहे हैं। हो भी यही रहा है। ऐसे शरीफ़ हैं जो किसी के आगे हाथ फ़ैलाने का ख्याल करना भी पाप समझते हैं, Below dignity समझते हैं। मरते मर जायेंगे, कहते हैं यह हालत दुनिया की हो रही है। उनको कौन देगा ? वह अपना दुख किसी अनुभवी पुरुष से तो पेश कर देंगे, दुनिया को नहीं बतायेंगे। जितना तुम बाँट कर खाओ उतना उनकी मदद हो जायेगी कि नहीं ? स्वामीजी महाराज ने फरमाया है कि -

भुखे प्यासे को दिलवावे वह नहीं भूखा जेरे धन का।

बड़ी साफगोई है। उनके पास नाम की दौलत है, मगर भूखे प्यासे को दिला कर खुशी मुफ़त में लेते हैं -

जो घर साधु भीख न पावे, भडुवा खात बतासा है ।

सचमुच साधु है, उसको भीख भी कोई नहीं देता है। भडुवा किसको कहते हैं, आप समझते ही है। उसे बतासे खाने को, मिठाईयाँ खाने को मिलती हैं। सच्ची बात तो यह है। लोगों ने घरों

को महात्माओं की फोटुओं से तो अरास्ता कर रखा है, किसी जिन्दा साधु को एक पैसा भी नहीं। वह भूखा मर रहा है। घर को तस्वीरों से तो अरास्ता करेंगे, मगर सच्चे महात्मा की कोई घर में जगह नहीं है। घर को कागजी फूलों से तो बड़ा सजायेंगे, मगर सचमुच फूल नहीं है, खुशबु कहां से आयेगी ? तो यह हालत है। यह काम है हमारा, मुआफ़ करना। याद रखो जिन्दगी से जिन्दगी आयेगी Inert (मुरदा) से, जड़ चीजों से, कभी जिन्दगी नहीं आयेगी। ख्वाहे किसी महात्मा की तस्वीरे रख लो, याद्दाश्त के लिये तो ठीक है, महात्मा की याद के लिये। मगर उसी पर फूल चढ़ाते रहोगे, तो जड़ की पूजा हुई कि नहीं ?

हरि की पूजा सतगुरु पूजो,
कर कृपा नाम तरावे ।

हरि की पूजा करना चाहते हो तो सत्स्वरूप हस्ती को पूजो, उसमें सत प्रगट है ना -

हरि जीओ नाम परियो रामदास।

वह आपको नाम से, परिपूर्ण परमात्मा से, जोड़ता है, भवसागर से पार करता है। आगे कहते हैं -

निरजीव पूजें, मढ़े सरेवें,
ताकि घाल बृथा सब जाये।

निरजीव (जड़) वस्तु की जो पूजा करते हैं, मढ़ियों मसानों को पूजते हैं, वह मेहनत तो करते हैं मगर मजदूरी कोई नहीं है। तो जिन्दा पुरुष की तो हम कदर नहीं करते। फोटो पर फूल चढ़ायेंगे मुआफ करना, मगर महापुरुष का कहना नहीं मानेंगे। करो वह काम जो कहते हैं। कोई नहीं। रिसालों से निकाल लेंगे Pamphlets से, मगर सच्चे महात्मा का कहना नहीं मानेंगे। यह रिसाले, यह किताबें और ग्रन्थ कहाँ से आये हैं ? किसी जिन्दा पुरुष से ! जिन्दा पुरुष उससे ज्यादा जिन्दगी देगा। किताबों से शौक बनेगा। बस। तो यही कहते हैं, कि साधु को तो कोई भीख नहीं देता, जो सचमुच है, और भड़ुवा - लफ्ज तो बड़ा सख्त बरता है - वह बताशे, मिठाईयां और दूध पीने को मिलता है, सिर पर सवार हो कर भी पीयेगा, नहीं तो श्राप देगा। महात्मा भी कभी श्राप देते हैं ? पूर्ण पुरुष कभी श्राप नहीं देता है। हां इसमें शक नहीं कि वह Negative power काल पावर जो है, वह सजा जरूर देती है,मगर महात्मा फिर भी भला चाहते हैं सबका, Peace be unto all, the world over.

तेरे भाणें सरबत का भला ।

यह उनका नजरिया है। यह हमारी हालत है जो हो रही है। जब तक हम जिन्दा पुरुष को पूजने वाले नहीं बनते, जिन्दगी कहां से आयेगी ? Life comes from life. जिन्दगी, जिन्दगी से आयेगी। जितनी जिन्दगी की हस्ती मिलेगी उतनी ही तुम तरक्की कर सकते हो। समझे! पूर्ण पुरुष की निशानी क्या है ? वह Conscious co-worker of divine plan है, वह कभी भी

यह नहीं कहता कि मैं यह करता हूं। वह कहता है, वह (प्रभु) करता है। हमेशा सन्त कहते हैं मेरा गुरु कर गया, परमात्मा करता है, मैं नहीं करता।

हीरा पाये परख नहीं जानें,
कौड़ी परखन करता है।

हीरा तो देखा ही कभी नहीं तो परखे क्या ? कौड़ियों को परखता है। हीरे का कभी Contact (परिचय) मिला हो तब ना! यही कारण है कि जिसकी किसी ऐसे महापुरुष से आँखे चार हुई अरे भई वह गुणवाद गा-गा कर थकता नहीं। उसको बयान नहीं कर सकता है। लोग कहते हैं वह क्या कहता है ? पागल है दीवाना है! अरे भई दीवाना नहीं, उसकी आँख में झलक है। समझे! उसने झलक देखी है। स्वामीजी महाराज फरमाते हैं -

यह आँखें हैं धुर घर की।

इन आँखों में प्रभु देखता है। यह प्रभु के रंग में रंगी पड़ी है -

चशमे तो मस्ते खुदा, दस्ते तो दस्ते खुदा ।

जिसकी आँख उसके रंग में मस्त है, उसकी आँखों में वह मस्ती आयेगी ना, वही रंग वह देगी। जो काम, क्रोध, यह वह, में रंगा पड़ा है, जितनी Stage तक है उतना ही रंग देगा, ज्यादा नहीं दे सकता है।

कहत कबीर सुनो भाई साधो,
हरि जैसे को तैसा है।

कबीर साहब कहते हैं, भई जैसे तुम हो, वैसे ही फल देगा, जैसे को तैसा है। जो धोखा देता है, उसको प्रभु नहीं मिलता है। और देखने वाली बात है, ठंडे दिल से बिचारो, अगर आप देखते हो किसी महापुरुष के पास गये, आपको कोई चीज नहीं मिली, कोई Way-up नहीं हुआ, थोड़ी पूंजी भी नहीं मिली, चलो पैसा ही सही रुपये में, तो ज्यादा की क्या उम्मीद कर सकते हो?

दामने ओ गीर ऐ यारे दलेर ।
के ओ वाकिफ अज़ बालाओ जेर ॥

किसी ऐसे का दामन पकड़ो, जो दोनों से, यहाँ और ऊपर, अगले देश से भी वाकफ़ हो। अगर नहीं है, तो यहां का वाकिफ़ यहां की वाकफ़ियत देगा, नहीं तो नहीं देगा। महात्माओं का जो मार्ग है, वह कहां से शुरु होता है ? Where the world's philosophies end, there the religion starts. जहां दुनिया के फ़िलसफ़े खत्म हो जाते हैं, वहां पर परमार्थ की क, ख, शुरु होती है, ए.बी.सी. शुरु होती है। इन्द्रियों के घाट से ऊपर जाकर। गया ही नहीं, तुमको क्या देगा ? अगर फिर भी तुम उसके पीछे आँखों पर पट्टी बान्ध कर जा रहे हो फिर क्या होगा हशर ? महापुरुष जब जब भी आये हैं, बड़े जोरदार लफ़्जों में इसको पेश करते रहे हैं। गुरु अमरदासजी साहब फ़रमाते हैं, उनको बड़ा तजरूबा था, सत्तर साल तक वह तलाश में रहे, कई महात्माओं से मिले होंगे। तो क्या कहते हैं -

अन्धे के राह दसिये अन्धा होय सो जाय ।

तुम देखते हो वह अन्धा है। उसकी आँख नहीं खुली, तुमको उससे कुछ मिल नहीं सकता है। बाहरमुखी साधनों में लगा है, और लगा रहा है, जो अन्धा होगा वही जायेगा उसके पीछे ? देखता है, मिला है तब तो ठीक,चलो, मिला ही नहीं तो -

अन्धे के राह दसिये, अन्धा होय सो जाये ।
होय सुजाखा नानका तां ओह क्यों उजड़ पाये ॥

तुम देखते हो वह अन्धा है। उसकी आँख नहीं खुली, तुमको उससे कुछ मिल नहीं सकता है। बाहरमुखी साधनों में लगा है, और लगा रहा है, जो अन्धा होगा वही जायेगा उसके पीछे ? देखता है, मिला है तब तो ठीक,चलो, मिला ही नहीं तो -

अन्धे के राह दसिये, अन्धा होय सो जाये ।
होय सुजाखा नानका तां ओह क्यों उजड़ पाये ॥

आँख वाला जान बूझ कर क्यों जाये ? कई कहते हैं ? गुरु को छोड़ना पाप है। अरे भई -

काचे गुरु ते मुक्ति न होय ।

अगर चीज़ मिली है, फिर छोड़ देना तो पाप है, दूसरे के पास जाओगे तो वह पहली भी गुम हो जायेगी। समझे! अगर नहीं मिली तो ? एक पहिली जमात में है - मेरे पास कई आते हैं लोग कि हमने गुरु धारण किया है। मैं कहता हूं बहुत अच्छा भई, यह चीज समझ में आ गई, जाओ अपने गुरु से पूछो, वह दे सकता है तो खुशी की बात है, अगर उसने Suggestion फ़िलहाल नहीं दी तुमको इस गर्ज से कि शायद तुम इसके लिये तैय्यार नहीं, तो जाओ, पूछो। दे सकता है, तो सबसे अच्छी बात, ना दे सके तो फिर क्या हशर हो ? आप बतायें। आपने कालिज में पढ़ना है। पांचवी वाला उस्ताद आपको मिल गया, वह तो नहीं पढ़ा सकता। जाओ पढ़ा सकता है खुशी की बात, नहीं पढ़ा सकता है तो इसमें क्या पाप है ? Commonsense (साधारण बुद्धि) की बात है। तो महापुरुषों ने यह कहा है, कबीर साहब कहते हैं -

काचे गुरु ते मुक्ति न होई ।

समझे ! काचे गुरु से मुक्ति नहीं भई। तो अगर ऐसा मिला है तो -

काचे गुरु को तजत न लागे बार ।

देर मत करो भई। क्यों जीवन बरबाद करते हो ? बड़ी Clear-cut (स्पष्ट) चीजें पेश की हैं। किसी की निंदा नहीं In the true interest of the soul (आत्मा की कल्याण के लिये) पेश कर दिया कि भई बात यह है। मिली है, तो चलो। जो तुमको नगद दे नहीं सकता कुछ भी, उधार पर रहते हो, तो चलो। और जो तुमको नगद दे नहीं सकता है कुछ भी,उधार पर राजी हो, तो तुम्हारी मर्जी किसका नुकसान है ? नुकसान तुम्हारा है। यह Warning (चेतावनी) है।

क्राईस्ट ने कहा है, Beware of the false masters खबरदार रहो भई। दो हजार साल पहिले की बात है। Beware of the false masters who come as sheep. भेड़ होती है ना, बड़ी ऊन नरम नरम मालूम होती है, कहते हैं, They are ravenous wolves. कि भेड़ के लिबास में वह भेड़िये होते हैं। यह दो हजार साल पहिले की बात है। और वेद भगवान क्या कहता है ? मैत्रेय उपनिषद पढ़िये। उसमें आता है कि अगर कोई वेदों को सुने सुनाये पर पढ़ता है बगैर गुरु के, तो वह बगैर गुरु के वेदों के सही मायनों को नहीं समझ सकेगा। और लोगों को जो समझायेगा, वह गलत समझायेगा। इसलिये सब का पाप उसके सिर पर है। वेदों के जमाने की बात यह है। फिर बताओ कोई नई बात नहीं पेश की जा रही वह चीज जो हम भूलते जाते हैं, उसको Clear-cut (सफाई के साथ) पेश करते रहे महात्मा हमेशा। हम भूलते रहे, वह पेश करते रहे। वह यह तो नहीं कहते कि मेरे पास आओ। वह यह कहते हैं जाओ यह चीज जहां से मिलती है ले लो। गुरु नानक साहब से पूछा गया कि महाराज जो कुछ आपने बतलाया है यह कहां से लें ? कहते हैं, ''जहां नाम मिले ते जाओ।'' यह चीज़ है, तुम्हारे अन्तर ज्योति स्वरूप परमात्मा है, वह अखण्ड की ध्वनि हो रही है, जहां से यह मिलती है जाओ ले लो। फिर आगे जवाब देते हैं, कैसे मिलेगी ?

गुरु परसादी कर्म कमाओ।

किसी अनुभवी पुरुष की कृपा से यह कर्म कमा सकते हो। वह यह नहीं कहते हैं कि यहां नहीं जाओ या वहां न जाओ। हमारे हजूर (बाबा सावनसिंहजी महाराज) थे, उन्होंने कहा,भई यह Truth है, तुमको पेश कर दी गई है। जाओ जहाँ जाते हो, इससे ज्यादा अच्छी चीज मिले, तुम भी लो, और मुझे भी बताना मैं भी जाऊंगा। महात्मा तो Open to conviction (आजाद ख्याल होते हैं)। हम तो भई सच के पुजारी है। अगर सच, जो मिला है, इससे जो और ज्यादा सच जो मिले, तो ले लो। अब आप देखेंगे, नजरिया अनुभवी पुरुषों का क्या रहा है और हम क्या समझ बैठे हैं। कबीर साहब कहते हैं, जैसे को तैसा है। जैसी नीयत वैसा फल। हम दिल में तो दुनिया की पूजा कर रहे हैं, और ऊपर से प्रभु को मांगते हैं, कैसे मिलेगा ? दुनिया में इसीलिये आज अधोगति हो रही है। सच्चे महात्मा के बगैर जीव की न कल्याण हुई, न हो सकती है। यह कबीर साहब का शब्द था। अब एक और छोटा सा शब्द आपके सामने गुरुबाणी का रखा जाता है। गौर से सुनिये वह क्या कहते हैं। गुरु रामदासजी का शब्द है छोटा सा,गौर से सुनिये-

जिसदे अन्दर सच है, सो
सच्चा नाम मुख सच सालाहे।

अब सवाल यह है कि जो प्रभु को पाना चाहते हैं, उन्हें क्या करना चाहिये ? सब महापुरुषों ने बयान किया है। गीता का चौथा अध्याय लीजिये पहिले, उसमें यह दिया है कि अगर तुम ज्ञान

को पाना चाहते हो तो जाओ किसी ऐसे महात्मा के पास जिसने अन्तर में परमात्मा के दर्शन किये हैं। पहिली बात। जिसने सच को पाया ही नहीं, वह तुमको क्या देगा ? तो फरमाते हैं कि, ''जिसदे अन्दर सच है सो सच्चा नाम मुख सच सालाहे।'' जिसके अन्तर सच है, वह उसी का बयान करेगा, देखा बयान करेगा ना ! जो देखा ही नहीं ? तो पहिले देखने वाला चाहिये ना। जिसने देखा नहीं, वह आपको क्या दिखायेगा ? कबीर साहब थे, एक पण्डित सरबाजीत थे, उनको कहने लगे अरे भई -

तेरा मेरा मनुवा कैसे इक होई रे।
मैं कहता हूं आंखन देखी,
तू कहता है कागत की लेखी।।

कहते हैं तू तो पढ़ा-पढ़ाया बयान करता है, मैं देखकर बयान कर रहा हूं। देखा बयान तो हमेशा ज्यादा वजनदार होता है ना !

सुन सन्तन की साची साखी,
सो बोले जो पेखें आखी।

तो कहते हैं, जिसके अन्तर सच है, वह उसी सच्चे का जिकर करेगा, जबान से भी उसी का बयान करेगा। जिसके अन्तर सच है ही नहीं, फिर ! सच किस को कहते हैं ? सवाल यह रहा अब-

नानक साचे को सच जान।
जित सेवईये सुख पाइये,
तेरी दरगेह चल्ले नाल।।

यह तारीफ़ की है। सच बोलना नहीं भई मुआफ करना, सच, साचा जो पुरुष है, जो (प्रभु) इजहार में आया है, उसका नाम सच है। उसकी तारीफ़ क्या की है ? कि वह सबका कर्ता है। समझे !

सच कर्ता सच करनहार।

तो अब बोलना न रहा ना। और क्या है -

सच कर्ता सच करनहार, सच साहेब सच टेक ।

वह कुल मालिक, उसी के आधार पर सब जगत चल रहा है ।

सच्चो सच बखाणियी सच्चो बुद्धि विवेक।

उस सच से ही तुम उस आदि सच जो है, उससे जुड़ सकते हो। किस को मिलता है ? जो विवेक बुद्धि रखता है, जो सत और असत का निर्णय कर सकता हो, उसको। तो मालिक, सच कहते है जिसको, वह कर्ता है सब का। कैसा है ? 'सच अलख'' इन्द्रियों के घाट से ऊपर लखा जाता है।

सच अलख बडानी तांकी गत कही न जाय ।

इन्द्रियों के घाट से वह बयान नहीं हो सकता, सच जो है।

कहे नानक अमृत नाम सुनो
पवित्र होवो साचने सुन में पठाओ ।

उसमें Sound principle (ध्वनि) है, उसके सुनने से तुम पवित्र हो जाओगे, सब गुणों का बास आप में हो जायेगा।

सुणिये सरा गुणां के गाह ।

उसको सुनने के लिये पठाओ। यह सच की तारीफ़ हो रही है। What is truth ? सच क्या है ? महापुरुषों ने तो बड़ा मजमून को खोल खोल कर बयान किया है। फिर आखर क्या कहते हैं ? बाणी में उसको, कई लफ्जों से सच को बयान किया है। कहते हैं -

सच बाणी है सच सबद है।

उसको बाणी भी कहा है, उसको सबद भी कहा है -

जां सच धरे प्यार ।

तुम सच से प्यार करो। बाणी, अब बाणी कई किसम की है। एक पवन की बाणी है, जो हम बोल रहे हैं। एक पक्की बाणी है, जो महापुरुषों ने देख कर बयान की है। एक वह बाणी है -

बाणी वज्जी चौजुगी सच्चो सच सुनाय ।

चारों युगों से जो बजती चली आई है, अब शक न रहा ना! उसको बाणी भी कहा है सच को, उस सच को सबद भी कहा है।

उतपत प्रलय सबदे होवें।
सबदे ही फिर ओपत होवे ॥

जो इजहार में आई है ताकत परमात्मा की, जिसके आधार पर उतपत्ति और प्रलय हो रही है, और दुबारा सृष्टि का आगाज (शुरूआत) होता है, उसका नाम सबद (शब्द) है। वह सबद कहां है ?

नानक सबद घटो घट आछे ।

वह तो घट-घट में है अब बाणी और सबद और नाम भी उसी को कहते हैं ।

हर का नाम मन में बसे हौमें क्रोध निवार।

उसी को नाम भी कहा -

हर हर उत्तम नाम है, जिन सिरजिया सब कोय ।
नामें ही ते सब जग होवा, बिन सतगुरु नाम न जापे।
अदृष्ट, अगोचर, नाम अपारा, अत रस मीठा नाम प्यारा ॥

वही बात आ गई। जो सच की तारीफ़ है, याने उसी चीज को मुखतलिफ लफ़्जों में बरता है. सच की तारीफ वही है, जो नाम,सबद, बाणी की तारीफ है। फिर अब सच की खबर कौन दे ? जो सच मुजस्सिम (सदेह) हो। क्यों ? देखो ना सच की खबर कौन दे सकता है ? जो सच ही किसी जिसम में Personify (व्यक्त) हो कर सच के साथ जोड़े -

गुरु में आप समोये सबद बरताया ।

प्रभु गुरु में समाता है, तब लोगों को सबद के साथ जोड़ता है। तो गुरु अमरदासजी साहब फरमाते हैं -

मेरे राम मैं हर बिन अवर न को।

कि मेरा तेरे सिवाय, हे प्रभु, कोई नहीं है -

सतगुरु सच प्रभु निर्मला ।

सतगुरु जो है वह सच मुजस्सम है, निर्मल प्रभु है, Word was made flesh and dwelt amongst us. कि वह शब्द सदेह हो गया और हमारे बीच रहा।

सबद मिलावा हो ।

वह तुमको उसके साथ जोड़ सकता है। देखो ना, गुरु के अन्तर भी कौन ताकत है जो प्रभु के साथ जोड़ती है ? वह प्रभु की ही ताकत है! जब उसका शरीक कोई नहीं, सानी कोई नहीं, उसके साथ कौन जोड़ सकता है ? यही कहोगे कि वही ताकत किसी पोल (प्रकाश स्तंभ) पर इजहार करके अपने साथ आप जीवों को जोड़ती है। यही मौलाना रूम साहिब ने कहा है, कि प्रभु ने हमे बाहर निकाल कर अन्दर जन्दरा (ताला) लगा दिया है, फिर गुरु की शकल बन कर उसी जन्दरे को खोलता है। तो इसलिये कहा -

गुरु में आप समोये सबद बरताया ।

तो वह (गुरु) शब्द मुजस्सिम (सदेह) है, शब्द सदेह है। असल में गुरु वही, शब्द ही है, मुआफ करना, वह शब्द गुरु है, मगर जिस पोल पर इजहार करता है, हम उसको भी कहते हैं यह गुरु है।

ब्रह्म बोले काया के ओले।
काया बिन ब्रह्म क्या बोले ॥

दोनो लाजम मलजूम हैं। जिस Level पर (अवस्था में) हम बैठे हैं, यहां समझने के लिये कोई हमजिन्स (सहजाति मनुष्य) चाहिये ना, जो बाहर तो दुनिया से जुड़ा पड़ा हो और अन्तर प्रभु का रूप हो -

तन दर्मियाने ख़ल्क ओ
जां निज़दे खुदावन्दे जहां ।

तन तो दुनिया के दर्मियान हो और जान प्रभु के साथ एक हो रही हो, तन तो दुनिया में काम काज करता नजर आये और, ''रूह बर हफ्त आसमां ''। रूह, आत्मा जो है, वह सातों असमानों पर जब चाहे जा सकती हो। बाहिर दुनिया से जुड़ा है, अन्तर प्रभु से है। वही तुमको उसके साथ जोड़ेगा जो मुजस्सिम (सदेह) शब्द होगा, और क्या होगा ? तो कहते हैं सच मुजस्सिम (सदेह) होकर हमें सच के साथ जोड़ता है। और ऐसे पुरुष को क्या कहते हैं हम ? सतगुरु !

सतगुरु सत सरूप है।

फिर यह कब से है !

आद सच, जुगाद सच, है
भी सच, नानक होसी भी सच।

Unchangeable permanence है, अटल अविनाशी है यह जो सच है। सच बोलना तीन गुणों का खासा है भई, मुआफ करना। Ethical life is a stepping-stone to spirituality यह सच बोलना और सदाचार का जीवन जो है, वह उस अटल, अविनाशी सच को पाने की सीढ़ी है पहली। यहां तो सच (अविनाशी सच) की महिमा गाई जा रही है, जिसके अन्तर सच है, उसकी तारीफ़ हो रही। यह सच है कहां ? फरमाते हैं-

लोको सच बरते सब अन्तर ,
सबनां करे प्रतिपाला ।

सबके अन्तर है। जैसे नाम की महिमा गाई, सबद की महिमा गाई, सच की भी यही गाई है। तो आप देखेंगे कि जिस इन्सान के अन्तर यह (सच) प्रगट है, वह क्या कहते हैं ? क्या आप ही के अन्तर में है ? कहते हैं नहीं, यह सारा संसार ही उसी का घर है ।

यह जग सच्चे की है कोठड़ी सच्चे का बिच वास

Body is the temple of God जिसम यह हरि मन्दिर है और यह सारा जगत ही हरि मन्दिर है, जिसमें सच बरत रहा है। यह है नजरिया अनुभवी पुरुषों का। मगर जब तक गुरु न मिले -

बाझ गुरु गुबार है बिन गुरु बूझ ना पाये ।

बिना गुरु के अन्धेर गुबार रहता है ।

गुरु मत्ती प्रगास होवे सच रहे लिव लाये ॥

गुरु मत से यह प्रकाश होता है, सच में लिव (लगन) लग जाती है। तो आप समझे -

जे सौ चन्दा ऊगवे सुरज चढ़े हजार ।
ऐते चानन होदिया गुरु बिन घोर अन्धार ॥
गुरु बिन घोर अन्धार,
गुरु बिन समझ न आवे ।

Clarity नहीं, समझ नहीं आती, Theory (सिद्धान्त) भी समझ नहीं आती है। फिर कहते हैं -

गुरु बिन सुरत न सिद्ध गुरु बिन मुक्ति न पावे ।

गुरु के बिना, अनुभवी महापुरुष के बिना हम सुरत नहीं बनते सही मायनों में, मन-इन्द्रियों से हम आजाद नहीं हो सकते। किसी चीज की प्राप्ति भी नहीं कर सकते। कितनी Clearcut (साफ़) चीज पेश की है ! Acting posing करने वालों की कैफियत (हालत) आपने सुन ली, अब यह उनकी कैफ़ियत है जो सच में रते हैं। तो गुरु रामदासजी साहब फ़रमा रहे हैं, कि जिसके अन्तर सच है, वही सच के साथ जोड़ सकता है, उसको बयान भी जबान से वही कर सकता है। वह देख कर बयान करता है। उसका बयान Conviction से है। इसलिये ऐसे अनुभवी पुरुष के पास जाओ। जिसके अन्तर सच प्रगट ही नहीं, वह आलम है (विद्वान) फाज़ल है तो हुआ क्या? वह इल्म सिखला देगा। डॉक्टर आपको जिसम (शरीर) की Science सिखला देगा। जो आत्म-तत्व वेत्ता पुरुष है, वह आत्मा - तत्व का बोध, अनुभव, देगा। तो पहिली जरूरत यह है। यही गीता कह रही है। यही और महापुरुष कह रहे हैं -

ओह हरि मार्ग आप चलदा,
होरनां नूं हरि मार्ग पाये ।

याने उस रस्ते पर वह आप जाने वाला है और दूसरों को चला सकता है, रस्ते पर डाल सकता है। रस्ता कहां से शुरू होता है ? Where the word's philosophies end there the religion starts. जहां इन्द्रियों का घाट खत्म होता है। जो आप इन्द्रियों के घाट से कभी ऊपर नहीं गया, तुम्हें कहां ले जायेगा ? यह बताओ ! तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं -

तेरा नेहचल सच साध संग पाया ।

वह सच जो हमेशा अटल और लाफ़ानी है, सच बोलना तो भाई तीन गुणों का खासा है ना, वह सच जो नेहचल है, कहां से मिलता है ? कहते हैं, साधु के संग से मिलता है।

नानक ते जन नहीं डुलाना ।

वह देखता है, उसके अब डोलने का क्या सवाल है ? वह देख कर जो बयान करता है। प्रहलाद को उसके पिता ने एक लोहे का थम्ब लाल करके आग का, उसको कहा, इसके साथ

चिपट जाओ। उसने (प्रहलाद) देखा वहां कीड़िया भी चल रही हैं। देखो ना! जो देख लेता है, प्रभु को, तो उसको क्या शक है ? दुनिया की आंख नहीं बनी, उसकी तो आंख बन गई है। आप देखेंगे, है क्या और हो क्या रहा है ? इस अन्धेरे-गुबार में महापुरुष आते हैं, जीवों को चिताते हैं, होश में लाते हैं। दुनिया क्या कहती है ? यह कुराहिया (पथभ्रष्ट) है भई, लोगों की अकले बिगाड़ता है। अरे भई अकलें खराब करता है कि सीधी तरफ़ डालता है ? उनको किसी का बुरा चितवन नहीं। वह चाहते हैं कि आत्मा प्रभु की अंश है, जन्मों जन्मों से भटक रही है, फिर अपने प्रभु से जुड़ जाये। और कोई बात नहीं। खाते तो अपना हैं, सिरदर्दी मुफ्त की मोल लेते हैं, बुरा-भला भी कहते हैं, फिर भी कहते हैं, कोई जीव बच जाये। और क्या है ?

जे अगे तीर्थ होवे ता मल लहे
छप्पड़ नहाते अगली मल लाये।

अगर कहीं जाओ, कोई दरिया हो, कोई तीर्थ हो, वहां नहाने से तो मैल उतरेगी। अगर छप्पड़ में नहाओगे तो अगली मैल लग जायेगी। मिसाल दी है, कि किसी ऐसे महात्मा से मिलो, जो Perpetual source (अनन्त, अविनाशी सोत्र) से मिला है, जो Mouthpiece of God है (जो प्रभु में अभेद हो गया है) हजारों लोग नहा जायें। यहां दरिया में हजारों नहाते हैं, कोई मैल चढ़ जाती है ? मैल उतरती है। ऐसे ही जो अनुभवी पुरुष है, Mouthpiece of God है, वह दरिया है, सैकड़ों की मैल उतर जाती है। अगर छप्पड़ों में चले जाओ तो ? छप्पड़ से मुराद जो ऊपर नहीं गये, जिसम जिस्मानियत की ग़लाजत में भरे पड़े हैं, खाहे आलिम हैं, या फाजल हैं, ग्रन्थाकार हैं या कुछ भी हैं। वह आपको तो लबड़ेंगे ही (मैल में सानेंगे ही) मुआफ करना।

लाहौर में एक दफा, हंसी की बात है, और समझने की बात भी है, कि जो कूड़ा-करकट होता है ना, गन्दगी वगैरा शहर की, उसका Tender (ठेका) हुआ, गन्दगी का भई ठेका लो। लोगों से Tender मांगे गये। तो एक ने लिखा कि गिलाज़त अव्वल दरजे की मुहय्या करेंगे। गिलाजत अज़ किसमें आला। समझने की बात है। यह लिखना पढ़ना तो किसमें आला की गिलाज़त है यह याद रखो। तुमको और लबेड़ती है, और ज्यादा मैल में सानती है।

हे विद्या तू बड़ी अविद्या।

फैलाव में ले जाती है ना Bookish knowledge is all wilderness, there is no way out. वेद भगवान कहता है, ''जो अविद्या में हैं, वह मर कर अंधकार लोकों में जायेंगे, जो विद्या में रत हैं, वह मर कर उनसे भी ज्यादा अन्धकार लोकों में जायेंगे।'' समझे! आत्मा का साक्षातकार कब होता है ? जब इन्द्रियां दमन हों, मन खड़ा हो और बुद्धि भी स्थिर हो, तब! आप बतायें । इल्म, आमिल के गले में फूलों का हार है। एक चीज को कई तरीकों से वह पेश

करेगा। वही चीज होगी, मगर नये तरीके से पेश करेगा। अगर अमल नहीं है तो क्या है ? जैसे गधा हो उस पर चन्दन का भार लदा हो, या किताबें लदी हों। बस। Merchandise (तिजारती सामान) से भरा है, मगर No way out न देखा है, न दिखा सकता है। तो ऐसे अनुभवी पुरुष के बगैर जीव की कल्याण नहीं। कहते हैं ऐसे तीर्थ को पकड़ो, जहां से तुम्हारी कुछ मैल उतरे। अगर छप्पड़ों में नहाओगे तो मैल और लग जायेगी ना। यही ख्याल गुरु बाणी में गुरु रामदासजी दे रहे हैं, और यही फ़रीद साहब कह रहे हैं। सौ सयाने एक ही मत। तरीका बयान अपना अपना है, मगर बात वही कहते हैं। वह फ़रमाते हैं-

फ़रीदा सोही सरवर ढूंढ लो जित्थो लभी बथ।

ऐसे सरोवर को ढूंढो जहां से तुम्हें कुछ मिले। अगर नहीं तो क्या है -

छपड़ ढुंढें क्या लहै चिक्कड़ डोवे हथ।

छप्पड़ में चले गये तो हाथ चिक्कड़ (कीचड़) में जायेंगे। तो किसी ऐसी हस्ती से मिलो जो Mouthpiece of God है, जो Perennial source (अनन्त स्रोत) से मिला हो।

जैसे में आवे खसम की बाणी
तैसा करी ज्ञान वे लालो।

ऐसे पुरुष से मिलो। आलिम एक घंटा Talk देगा, उसमें सिर दुख जायेगा। अनुभवी पुरुष घन्टों बात करेगा। क्यों ? वह सोचता नहीं है। वह बयान करता है As it comes. ऐमरसन कहता है, जो ख्यालात बगैर सोचे समझे के आते हैं They are always perfect उसमें ज़ेर ज़बर लगाने की जरूरत नहीं, cut and dried (नपा तुला) चला आता है। तो ऐसे पुरुष से मिलो, तब तो तुम्हारा काम बन जायेगा। खुद ही सच से नहीं जुड़ा है, तुमको क्या देगा ? अगर आलमों, (विद्वानों) फाजलों का काम हो तो यह काम सब फाज़ल ले जाते। बड़े बड़े दुनिया में Learned (विद्वान) आदमी है।

मैं अमेरिका में गया। वहां मुझे एक साहब मिले। दुनिया में तीन गिने गये हैं, आलम फाजल हैं, और वह उनमें से एक था। वह कहने लगा, You are the only man who has appealed to me in life कि आप ही एक आदमी हो जिसकी बात मेरे दिल में लगी है। इल्म के साथ अमल नहीं है तो कुछ नहीं है। श्री रामकृष्ण परमहंस के पास जब केशवचन्द्र सेन गये हैं, तो फरमाने लगे, अरे भई तुमने एक बात से समझना हो तो मेरे पास आओ, बहुत बातों से समझना हो तो विवेकानन्द के पास चले जाओ। तो अमल के बगैर - अगर फ़र्ज करो कोई डिग्री नहीं भी ली तो वह बात तो वही करेगा ना, उस से Vocabulary जो उसकी Command में हैं (अर्थात जितना भाषा का ज्ञान उसके पास है उसके अनुसार) उसी में मिसाल दे

कर समझा देगा। बुल्लेशाह गये शाहइनायत के पास। वह अराई थे (माली) बाग में वह काम कर रहे थे। बुल्हेशाह ने जाकर पूछा, कहने लगे, प्रभु कैसे मिलता है ? बड़ी साफ़गोई की।

साई दा की पावणां, इधरों पटणां ने उधर लावणां ।

बस। बात तो वही है। सुरत को मन इन्द्रियों के बाहर के फैलाव से हटाओ, अन्तर प्रभु तुम्हारा जीवन आधार है। इतनी बातें जो की मुआफ करना अब तक, डेढ़ दो घन्टे में, मतलब क्या निकला ? बात तो यही निकली आखर कि नहीं ? हां जो इसको बाहर से हटा सकता है, हटा है और हटा सकता है, उसकी सोहबत करो। How to invert ? How to withdraw? How to rise above the body-consciousness ? यह कह दो कि जड़ से कैसे चेतन को अलेहदा कर सकते हैं, यह कह दो कैसे इन्द्रियों को उलट सकते हैं। बात वही है। एक चीज को कई तरीकों से पेश करेंगे। तो जब तक इस का आमिल पुरुष नहीं मिलेगा काम नहीं बनेगा। यहां कौमों, मजहबों, समाजों का सवाल नहीं है भई। अपनी अपनी समाज में रहो। अपने अपने बोले रखो। यह World wide तालीम है जो परम्परा से चली आई। जितने जितने महापुरुषों ने जहां जहां तक रसाई की, पेश करते गये। हमारे दिल में सबके लिये इज्जत है। आखर वह पिन्ड से तो ऊपर गये कि नहीं ? कहां तक यह सवाल उन लोगों के लिये रहा जो आगे जायें। हमारे लिये नगद सौदा क्या है कि वह दे क्या सकता है ? बात तो यह है। बड़ी मोटी बात। अगर आपको कुछ Experience दे सकता है, First-hand शुरू में तो Develop भी हो सकता है। अगर नहीं दे सकता है एक, तो अच्छा भई तुम बैठ जाओ शायद हो जाये। एक Definite है (भरोसे के साथ कहता है) You sit down, you will have it (तुम बैठो, जरूर मिलेगा अनुभव) बड़ी चीज हुई ना। वह उसका Profession (काम) है, मैं अर्ज करूंगा। जब अष्टावक्र जा बैठे थे तख्त पर, उन्होंने कहा था ना कि जो मुझे अनुभव दे वह यहां आ कर बैठे। कितनी देर में ? बड़ा थोड़ा वक्त बयान किया है। जितनी देर में घोड़े पर चढ़ते हुये एक रकाब में पैर रखकर दूसरे रकाब में पांव रखते हैं। अरे भई यह आलिमों का काम नहीं। आ कर बैठ गये। कोई अहंकार से बैठे हैं ? नहीं ! उसका रोज दिन का काम है। वह कहता है How to withdraw ? I know वह बिठा देता है। तो ऐसे Competent (समरथ) पुरुष की संगत में बैठो। You will have some experience जब तक न हो, मेरे ख्याल में तो हिन्दोस्तान में तो आप कह दो कि मरने के बाद मिलेगा तो भी लोग मान जायेंगे। अरे भई West (पश्चिम) में लोग मानने को तैय्यार नहीं। वह कहते हैं दो, और हम करने को तैय्यार हैं, क्या दोगे ! Spirituality (आत्मज्ञान) Prove (तर्क से सिद्ध) नहीं हो सकती। अनुभवी पुरुष के पास तो Prove हो जायेगी। वह कहता है, All right, sit down, have it. बैठो। मिलेगा। अब देखिये Comparative values से (तुलनात्मक दृष्टि से) कितनी Higher value (ऊंची चीज) है Competency(पूर्ण पुरुष की समरथा) और केवल ऐसे पुरुषों की तारिफ हो रही है।

तीर्थ पूरा सतगुरु जो अन दिन,
हर हर नाम धियाये।

कहते हैं जो सतगुरु है ना, वह पूरा तीर्थ है। पूरा सतगुरु जो है, वह तीर्थ है। उसके वहां नहाने से सब मलें उतरेंगी इन्द्रियों की, देहध्यास उड़ेगा। स्थूल, सूक्षम, कारण से पार जा सकते हैं, आत्मा निरोल आत्मा बन सकेगी, और उस रंग में रंगी जायेगी। क्यों ? कैसे रंगी जायेगी ? क्योंकि वह खुद रंगा हुआ है उसमें धियाने वाला है उस नाम का। नाम सबद, बाणी वैसे एक ही मायनों में बरता है।

नानक नावें के सब किछ बस है

वह Controlling power (करन कारण सत्ता) है। ''पूरे भाग कोई पाये।'' अक्षरों से चल कर उस नामी से जो सब को Control कर रहा है, जो जीवन आधार है, उसको पकड़ना है। कहते हैं क्योंकि वह नाम के ध्याने वाला है, इसलिये Mouthpiece of God है, उसमें सत की धारा बह रही है कहो। उसके पास जाने से उस सत की धारा जो तुम्हारे अन्तर में भी है, मगर मुआफ करना, यह कह दो, Earth हो रही है। उसका अनुभव होने लगेगा, बीच से जो आलायश (मल) है, वह हटा देगा, withdraw करेगा, इन्द्रियों के घाट से उलटा करेगा, Way-up करेगा। You will have it. थोड़ा सही, बहुत सही, अपनी अपनी Background रही। जब तक ऐसा आमिल पुरुष न मिले काम नहीं बनता। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि ऐसे पुरुष को पकड़ो। क्या यह काम हमारा ग्रन्थों पोथियों से हो सकेगा ? सवाल तो यह है। ग्रन्थ पोथियां जो हैं, ऐसे पुरुषों के, अनुभवी पुरुषों के, First-hand experiences हैं, उनका Fine record हैं। अब उन के लिये भी तो किसी आमिल पुरुष को जरूरत है ना ! आलम तो एक एक के पांच पांच अर्थ कर देंगे, कौन सा सही है ? देखा ही नहीं, बयान क्या करेंगे ? इसलिये भाई गुरुदास ने यह कहा कि -

वेद ग्रन्थ गुरु हट हैं
जित लग भवजल पार उतारा ।

वेद और ग्रन्थ, गुरु की दुकान है। दुकानें सब है यह भी। महात्मा यह कहता है, यह भी कहता है, वह भी कहता है। जिसने देखा है, वह सबसे Perennial नजर आता है ना, उसके सामने मजमून खड़ा है। यह भी कह रहा है, वह भी कह रहा है, He sees himself (वह तत्व वेता है) वह कहता है, वह भी यही कह रहे हैं बाणियों में, देखिये वह पेश करता है आप सबको शहात (गवाही) जो भाई जिस समाज से ताल्लुक रखता है, अगर उसी की धर्म पुस्तक से उसको पेश कर दिया तो फिर ज्यादा समझाने की जरूरत नहीं रहती है ना ! तो इसलिये पेश करता है। जब तक -

गुरु बाझों न बूझे जिच्चर धरे न गुर औतारा ।

बगैर गुरु के यह चीज मिलती नहीं। जब तक वह औतार न धरे, कोई अनुभवी पुरुष मिले तो ग्रन्थ-पोथियां सब काम देने वाली हैं। मगर मुआफ करना, हकीम ही न हो, दुकाने ढेर लगी हों, कहीं जहर में हाथ डालोगे मर जाओगे। तो दुकानों से मुराद है, वह समझता है आपको, मुखतलिफ़ महात्माओं की बाणियों से। उसने गति को पाया है, वह मोहताज तो नहीं, मगर आप आम लोगों के समझाने के लिये उन्हीं के घर से यह चीज पेश की जाती है। मैं West (पश्चिम) में गया। क्राईस्ट की Sense से (मत से) पेश किया, वह यह कहता है। होश आ गई। फिर दूसरों से पेश कर दिया, भई यह है, और अब तुम्हारे अन्तर है। देखो। When you see (जब देखोगे) Conviction (विश्वास) तो तभी होगी ना! जाओ किसी ऐसे महात्मा के पास जो तुमको कुछ दे सके। अगर दुनिया में तुम इतने सयाने हो, नगद सौदा मांगते हो, तो इसमें क्यों उधार रखते हो भई ? बड़ी मोटी बात है। मगर इस राज़ (भेद) के वाकफ बहुत कम आगे भी थे, अब भी कम हैं। हैं सही, दुनिया खाली नहीं है। एक ही, मैं कहता हूं अनेक हो, क्या हर्ज है। पावर तो वही है जिस पोल पर भी है। अगर दस पोलों पर इजहार करे तो क्या हर्ज है, करे सही। वहां कुछ मिल सकता हो। तारीख (इतिहास) यह बतलाती है कि एक वक्त में एक से ज्यादा महात्मा हुये हैं। तुलसी साहब और स्वामीजी Contemporary (समकालीन) रहे। कबीर साहब और गुरु नानक साहब 48 साल इकट्ठे रहे। मौलाना रूम और शम्स तबरेज, दादू साहब और गुरु अर्जुन साहब इकट्ठे रहे, तारीख (इतिहास) बतलाती है। ज्यादा होना कोई असम्भव बात नहीं । खुशी की बात है, जितने ज्यादा हो। यह Qualification (समरथा) है कि जो अनुभव दे सके। Go and find out. ढूंढो, जहां से मिलता है।

तीर्थ पूरा सतगुरु जो अनदिन,
हर हर नाम धियाये ।

क्योंकि वह धियाने वाला है। उसकी आँख खुली है, तुम्हारी खोल सकता है। अगर उसकी आँख नहीं खुली, तो क्या होगा -

यह जग अन्धा सब अन्ध कमावें ।

नतीजा क्या होता है ?

बिन गुरु मग न पाये ।
नानक सतगुरु मिले तां अखीं वेखे ।
घरे अन्दर सच पाये ।

समझे ! आप देख कर Conviction हो गई ना !

जब लग न देखूं अपनी नैनी।
तब लग न पतीजूं गुरु की बैनी ॥

कितनी साफ़गोई करते हैं ? एक चीज को जो 70 साल की तलाश पर मिली है, खोल खोल कर पेश कर रहे हैं, कोई धोखा न रहे दुनिया में। मगर इनकी समझ भी तभी आती है, जब कोई आमिल (अनुभवी) पुरुष मिले, नहीं तो यह (पोथियां) Sealed books हैं, (मुहरबन्द किताबें) हैं, Posterity to posterity यह Hand down होती रहती है (परम्परागत चली आती है) बस। है यही, मगर आमिल के बगैर समझ नहीं आती। बात तो यह है।

ओ आप छुटा कुटम्ब स्यों ।
दे हर हर नाम सब सृष्टि छुड़ाये ॥

कहते हैं उसका अपना भी निसतारा, उसके कुटुम्ब का भी और सृष्टि में जो भी उसके पास आये उसका भी है। तो जरूरत किस बात की है ?

मरदे हज्जी मरदे हाजी रा तलब ।
ख़ाह हिन्दू ख़ाह तुर्को ख़ाह अरब ॥

अगर प्रभु के देश की यात्रा करनी है, तो किसी हाजी को साथ ले लो। कौन हो ? कहते हैं ख्वाहे हिन्दू हो, मौलाना रूम साहब का कलाम है, फ़ारसी में कह रहे हैं, ख्वाहे हिन्दू हो, ख्वाहे तुर्की हो, या अरबी हो। अरे भई किसी समाज का आदर्श तो यही है ना ! जब तक इस आदर्श की हस्ती हमें मिलती नहीं तो नतीजा क्या है ?

अन्धा होय सो जे अन्ध कमावे,
जिस हृदय लोहिन नाहि ।

आँख नहीं खुली दिल की तो फिर -

अन्धे से न आखियन जे हुक्मी अन्धा हो ।

प्रभु की दी हुई आंख नहीं तो उसको अन्धा नहीं कहते। अन्धा वही है जिसके हृदय की आँख नहीं है। सच्ची बात तो यह है। जिसकी आँख खुली है वह तुम्हारी खोल देगा।

नानक से अखड़िया बेअन्न
जिन दिसन्दो मापिरी ।

वह आंखें और हैं, चमड़े की आँख नहीं। यह सब महापुरुष कहते हैं, कि तुम मुझको इस चमड़े की आँख से नहीं देख सकते, बल्कि उस दिव्य चक्षु से जो मैंने तुम को बखशी है। वह सबके अन्तर है मगर वह बन्द है। जिसकी खुली है, जो खोल सकता है, जाओ उसके पास। उधार पर जीवन बरबाद न करो। बड़ी मोटी बात। इसमें तुम्हारा नुकसान है। किसी का क्या जायेगा ?

वह आप छुटा कुटम्ब सियों दे हर हर नाम सब सृष्टि छुड़ाये ।
जन नानक तिस बलिहारणी जो आप जपै औरां नाम जपाये ॥

अब गुरु रामदासजी फरमाते हैं, कि हम उन पर बलिहार हैं जो आप जपते हैं, और लोगों को जपाते हैं। बस। आप जपते हैं और लोग को जपाते हैं, उन पर हम कुर्बान हैं। तो यह चीज़ किन के पास रही ? जो आमिल पुरुष है। जो अनुभवी पुरुष हैं, उनकी दौलत है। तो मौलाना रूम साहब फरमाते हैं। ''गर अयां खाही।'' कि अगर तुम उसको प्रत्यक्ष देखना चाहते हो तो क्या करो ? कहते हैं, ''खाक पाये अज़ा सुरमा''। कि उनके पांव की मिट्टी का सुरमा तुम बना लो। समझे ! नतीजा क्या होगा ?

आं के अजां कोरे मादर जादणृ राह बीदन ।

कहते हैं जन्म से अन्धों को वह आँखे बखश देते हैं। जन्म से हम प्रभु को नहीं देखते हैं ना। वह आँख बनाता है, देखने वाला बना देता है। वह देखते हैं, दिखा देते हैं -

सन्त संग अन्तर प्रभु डीठा ।

यह अनुभव की बात है। अब आप देखेंगे कि यह जो महापुरुषों की बाणियां आपके सामने रखी गई इनमें Clarity (सफ़ाई) है कि नहीं, साफ़गोई। कोई तसन्ना नहीं, कोई बनावट नहीं कोई खैंचातानी नहीं, कोई किसी किसम की धड़ेबन्दी नहीं। Clear-cut चीज़ पेश हो रही है, इसको कमाओ, मनुष्य जीवन से फायदा उठाओ। मनुष्य जीवन भागों से मिला है, यह काम तुम केवल मनुष्य जीवन में ही कर सकते हो, और किसी जीवन में नहीं। जिस समाज में हो मुबारक हो। रह कर किसी अनुभवी पुरुष के चरणों में जाओ। वह तुम्हारी आँख खोल देगा। तुम्हारा जीवन सफल हो जायेगा। तो हर एक समाज में महापुरुष आये हैं समझे! जिस समाज में हो, हर एक में पा सकते हो। सिर्फ जरुरत इसी बात की है, जिसकी आँख खुली है, उसकी सोहबत अखत्यार करो। तुम्हारा कल्याण हो जायेगा। तो यह दो शब्द थे जो आपके सामने रखे गये। चाहिये किसी ऐसे पुरुष की संगत में बैठना, जो इस राज (भेद) का वाकिफ हो। महापुरुषों ने कहा-

धुर खसमें का हुक्म पया,
बिन सतगुरु चेतिया न जाये।

यह Fundamental असूल है कि बगैर सतस्वरूप हस्ती के हम उसको पा नहीं सकते हैं। तो इसीलिये भई कोशिश करो, तलाश करो। मौलाना रूम साहब कहते हैं,गली बगली करो, शहर बशहर करो, तलाश करो ऐसे महापुरुष को जो तुमको कुछ दे सके।

जहां नाम मिले तैं जाओ।

जब जब ऐसा महापुरुष मिलेगा तुमको कुछ अयां (ज़ाहिर) चीज मिलेगी। तभी आगे यकीन होगा ना।

सन्तन मोको पूंजी सौंपी उतरियो मन को धोखा।
धर्मराय अब क्या करेगो जो फाटो सगलो लेखा ॥

जीवन की सच्ची कल्याण आपकी हो सकती है, अगर कोई महापुरुष मिल जाये। तो किसी समाज में रहो,वह समाजों के Level से आपको नहीं देखता है, वह आत्मा के Level से आपको देखता है। सच्ची बात तो यह है।

सतगुर ऐसा जानिये जो सबसे लये मिलाय जिओ।

जो सबको मिला कर बैठता है। यह पहिला काम है। सब समाजें उसको प्यारी है, सब कौमें सब मुल्क प्यारे हैं। वह आज़ाद पुरुष है, तुमको आजाद करने आता है। समझे ! यह उसका नजरिया हमेशा से रहा है। जब भी ऐसे महापुरुष से ताल्लुक आये, ''जाईन्दा याबिन्दा।'' अर्थात् जिसके अन्तर सच्ची तड़प है, परमात्मा सामान करता है, कोई न कोई ऐसे पुरुष मिलाने का जो उसको अन्तर में Contact दे सकता हो (प्रभु से जोड़ सकता हो) यह उसका काम है। वह (प्रभु) देख रहा है, कौन सा हृदय मुझे चाह रहा है, वह कपट को भी जानता है। वह जाहिरा दिली भाव को भी जानता है। सो दिली भाव को बदलना चाहिये, प्रभु कोई दूर नहीं है। वह हमारी आत्मा की आत्मा है।

घरे अन्दर वथ पाये।

इसी के अन्तर चीज़ है, बाहर भटकने में क्या पड़ा है ? समझाने बुझाने के लिये सामान बनाये गये थे, उनसे फायदा उठा लो और चलो अन्तर। अन्तर वह आगे ही तुम्हारे साथ मौजूद है, मगर बाहिरमुखी होने के कारण उससे हम दूर रहे। वह कहीं दूर नहीं हैं, वह हमारी आत्मा है।❑